चकमक

जून, 2003 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 10.00



एक तने की चिट्ठी



रामनाथ, भवरदी, हरदा, म.प्र.



विश्वविजय सिंह, 6 वर्ष, लखनऊ, उ.प्र.

एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष -18 अंक -12 जून 2003

क्या-क्या है इस अंक में ?

चाँद वाली अम्मा

अम्मा अकेली रहती थी, घर के सारे काम खुद ही करती थी। पर एक दिन अम्मा अचानक यूँ चाँद पर कैसे पहुँच गई? ज़रा पता तो करो। यह कहानी पढ़ो पेज 26 पर।

सवालीराम...

हिचकी किसे नहीं आती। कभी न कभी सब इससे परेशान होते हैं और इससे निजात पाने के लिए ढेर सारे टोटके आज़माते हैं। चलो इस बार सवालीरामजी से समझते हैं कि हिचकी आती क्यों है, पेज 36 पर...

एक तने की चिट्ठी

पेड़-पौधों में फूल होते हैं, मज़ेदार फल होते हैं जो हमें खूब लुभाते हैं। ज़ाहिर है तने महाशय को रश्क होते होगा कि कोई मेरी तरफ गौर ही नहीं करता। तो उन्होंने चिट्ठी लिखी है तुम्हें। पढ़ोगे तो अगली बार बगीचे में जाकर पेड़-पौधों के तनों की ओर ज़रूर ध्यान दोगे।

कहानी

कविता

खेल-प्रयोग

हर बार की तरह

और यह भी

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात....

दोस्तो,

तुम्हारे इम्तिहान के नतीजे आ चुके होंगे! कुछ को शाबाशी मिली होगी और कुछ को डाँट-फटकार या शायद मारपीट भी! कभी-कभी मन में सवाल आता है कि दुनिया क्या बस बड़ों की है?

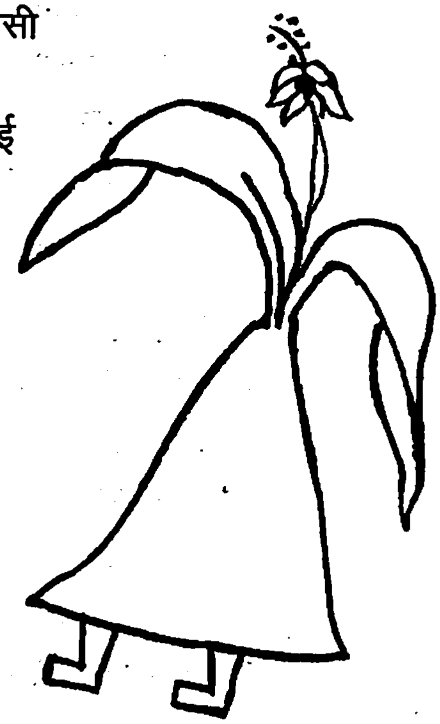
क्या इस बात के कोई मायने नहीं कि बात हमसे जुड़ी है। मायने बस इसका है कि उन्हें क्या पसंद है। उनकी यही पसंद हमारे लिए कानून होती है। शायद ही ऐसा कोई पहलू होगा जिस पर हमसे राय तक माँगी जाती हो। क्या हममें कुछ भी तय करने ....बल्कि कहो कि राय भर देने की अकल नहीं?

सबकुछ तो बड़े ही तय कर देते हैं। यहाँ तक कि कम उमर में शादी तक कर डालते हैं हमारी। ऐसा हर साल होता है। इस साल भी बारह-तेरह जैसी नाज़ुक उमर के बच्चों के विवाह कर दिए गए। उस उमर में जब वो दुनिया को जानने-समझने के लिए जूझ रहे होते हैं। जब रोज़ एक नई दुनिया उनके सामने खुल रही होती है। उन पर शादी जैसी चीज़ थोप दी जाती है......समझदार बड़ों के द्वारा ही।

शायद तुम्हें लगता हो ....हम क्या कर सकते हैं? तो फिर तुम से एक-दो सवाल हैं। अगर बड़े कुछ भी गलती करें और दूसरे बड़े उस पर आवाज़ न उठाएँ तो क्या हम इसे सहते रहेंगे? क्या हम उन्हीं जैसे सम्वेदनहीन बड़ों में तब्दील होते जाएँगे? ऐसे में इतना तो तय है कि तुम्हारे शामिल हुए बगैर एक बेहतर दुनिया की कोशिश कभी पूरी नहीं होगी।

तुम्हारे आसपास भी तो बाल विवाह होते होंगे? तुम्हें कैसा लगता है? तुम्हारी चिट्ठी का इंतज़ार रहेगा।

● चकमक



मिलिशा दुबाषे, दूसरी, देवास, म. प्र.

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-18 अंक-12 जून 2003

सम्पादन
विनोद रायना
कविता सुरेश
टुलटुल विश्वास
सुशील शुक्ल

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

वितरण
कमल सिंह
मनोज निगम

सहयोग
राकेश खत्री

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई-7/एच आई जी - 453
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016 (म. प्र.)
फोन : 2463380
ई-मेल : eklavyamp@vsnl.com

कवर का कागज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

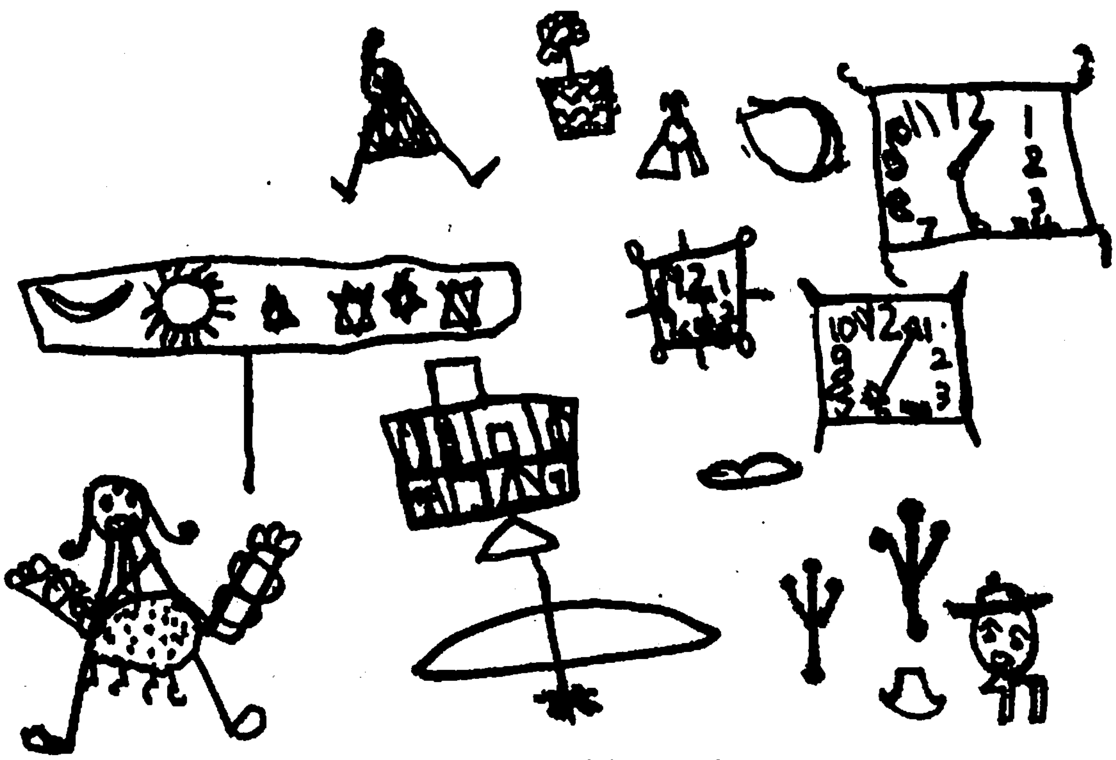
चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 30.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

गर्मी की छुट्टियाँ



मैं गर्मियों की छुट्टी में गाँव रोहना गया था। गाँव में मेरी दीदी की शादी थी। वहाँ हमें खूब मज़ा आया। मुझे छुट्टियों में कॉमिक्स पढ़ना अच्छा लगता है। मैंने स्पाइडर मैन, चाचा चौधरी आदि कॉमिक्स पढ़ा। मुझे यह कॉमिक्स बहुत अच्छी लगी। मैं अपने नानाजी के यहाँ गया था। वे बैतूल में रहते हैं। वापिस लौटते समय वहाँ का प्रसिद्ध बालाजीपुरम भी देखने गए। वह मन्दिर हमें बहुत अच्छा लगा। वहाँ हमने फोटो भी खींची थी। रास्ते में हमने बरेठा की गुलाइयों का सौन्दर्य देखा। वहाँ हमें बहुत अच्छा लगा। ऐसे हमारे गर्मियों के दिन बीत गए।

● **रंजीत राजपूत, नर्मदा कॉलोनी, होशंगाबाद, म. प्र.**



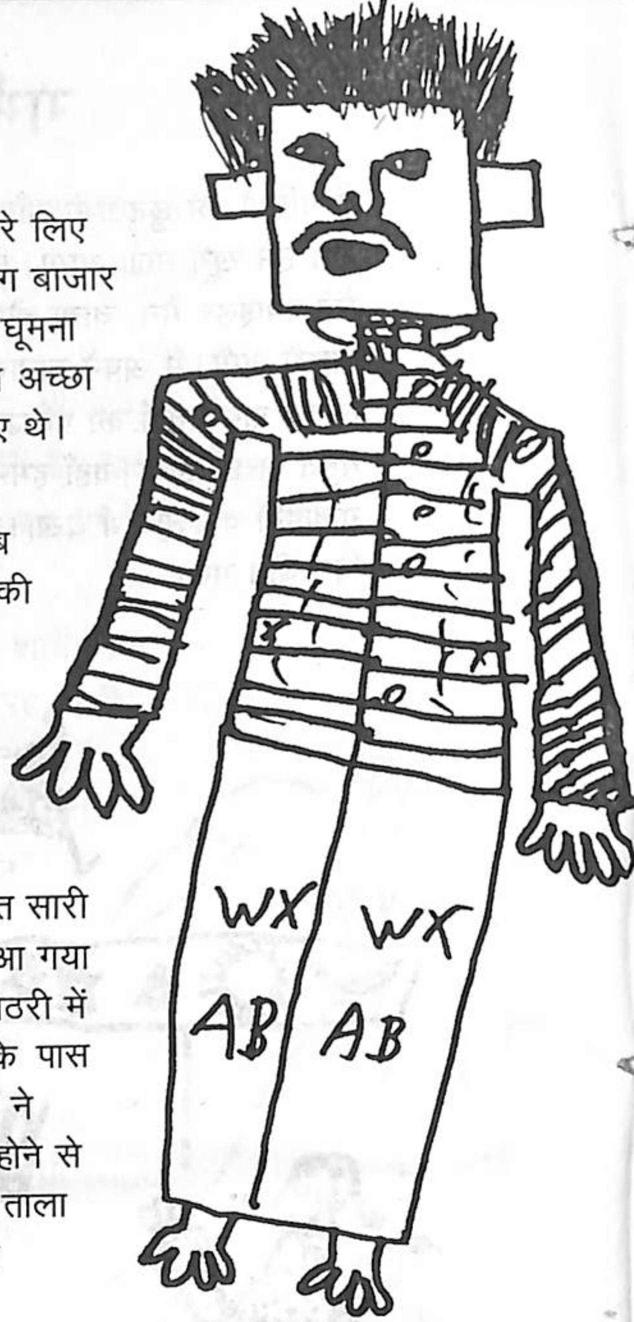
● **देविका शर्मा, दूसरी, रायपुर, छत्तीसगढ़**

मैं गर्मी की छुट्टियों में अपने दादाजी के साथ अंग्रेज़ी पढ़ता हूँ। मेरे दादाजी मुझे अंग्रेजी पढ़ना सिखाते हैं। और मैं अपने मामाजी के घर भी गया था। और मैं वहाँ चार दिन रहा। मैं अपने घर के बगीचे में पानी देता हूँ। मैं भोपाल गया था। भोपाल में अपनी बुआ के घर गया था। मैंने भोपाल का वन विहार देखा। यहाँ पर बहुत सुन्दर-सुन्दर जानवर देखे। इसमें से मुझे सफेद भालू बहुत सुन्दर लगा। और मैं एक दिन के लिए अपनी मौसी के घर गया था। और एक दिन पवारखेड़ा छोटी बुआ के घर रहा। मुझे क्रिकेट अच्छा लगता है। मैं क्रिकेट सुबह शाम खेलता हूँ। और मैं अपनी दादी के साथ खेलता हूँ।

● **सुमित चौधरी, छटवीं, होशंगाबाद, म. प्र.**



मेरे नानाजी



मैं अपने नानाजी को बहुत प्यार करता था। वे हमारे लिए मिठाई या तो फिर बिस्किट या टॉफी लाते थे। जब हम लोग बाजार जाते थे तो वे भी हमारे साथ बाजार जाते थे। उनके साथ घूमना हमें अच्छा लगता था। जब वे दिल्ली आते थे तब हमें बहुत अच्छा लगता था। हम उन्हें चिड़ियाघर और अप्पूघर घुमाने ले गए थे। वहाँ उन्होंने हमारे साथ बड़ा मज़ा किया था।

नानाजी की बोली मुझे बहुत अच्छी लगती थी। जब कभी वह कहते थे..... 'चहिया बड़ी नीक बनी है', तब उनकी बातों को सुनकर बड़ा मज़ा आता था। जब भी वो दिल्ली आते थे गाँव से हमारे लिए भुजा चूड़ा, घी, अमावट और कभी-कभी अचार, खटाई लाते थे। जब हम उसे खाते थे तो खा के बड़ा मज़ा आता था।

गर्मी की छुट्टियों में जब मैं गाँव जाता था तो उनसे खूब बातें करता था। वो हमें रात में सोते समय बहुत सारी कहानियाँ सुनाते थे कि एक बार जब उनके गाँव में चोर आ गया तो नानाजी ने उसे कैसे पकड़ा। रात भर उस चोर को कोठरी में बन्द किया गया था। लोगों ने सोचा कि कल उसे पुलिस के पास ले जाएँगे। लेकिन कोठरी के अन्दर एक कुदाल थी। चोर ने उसी कुदाल से गड्ढा खोदकर रास्ता बनाया और सुबह होने से पहले ही भाग गया। जब सुबह नानाजी और सब लोगों ने ताला खोलकर देखा तो पता चला कि चोर तो कुदाल से गड्ढा खोदकर भाग गया है। यह सच्ची कहानी सुनकर मुझे, दीदी और सभी को हँसी आ गई।

● अमन शर्मा, पहली, अलीगढ़, उ. प्र.

जब भी आँधी आती थी नानाजी हमें या किसी और को बगिया में ले जाते थे और आम बटोर लाते थे। पिछली बार जब मैं गर्मी की छुट्टियों में गाँव गया था तो नानाजी ने बढ़ई बुलवाकर मेरे लिए लकड़ी का एक अच्छा-सा बैट बनवाया था। उस साल हम लोगों ने नानाजी के खेतों में मकई के दाने बोए थे। और जब दिल्ली वापिस जा रहे थे तो नानाजी ने एक बोरा कच्चा आम तोड़कर हमें दे दिया था। जब हम वापिस दिल्ली चले आए तो एक महीना भी नहीं बीता था कि बस्ती से मामाजी का फोन आया ..रात के बारह बजे नानाजी गुज़र गए। उन्हें तीसरी बार हार्टअटैक आया था। यह बात सुनकर मुझे बहुत रोना आया... अब हमें गाँव में कहानियाँ कौन सुनाएगा! आम तोड़कर कौन देगा! और कौन कहेगा '..बाबू चहिया बड़ी नीक बनी है..!' मुझे नानाजी के न होने का बड़ा दुख है। अगर नानाजी होते तो कितना मज़ा आता..........

● शिवाँक, नई दिल्ली

मच्छर और हाथी

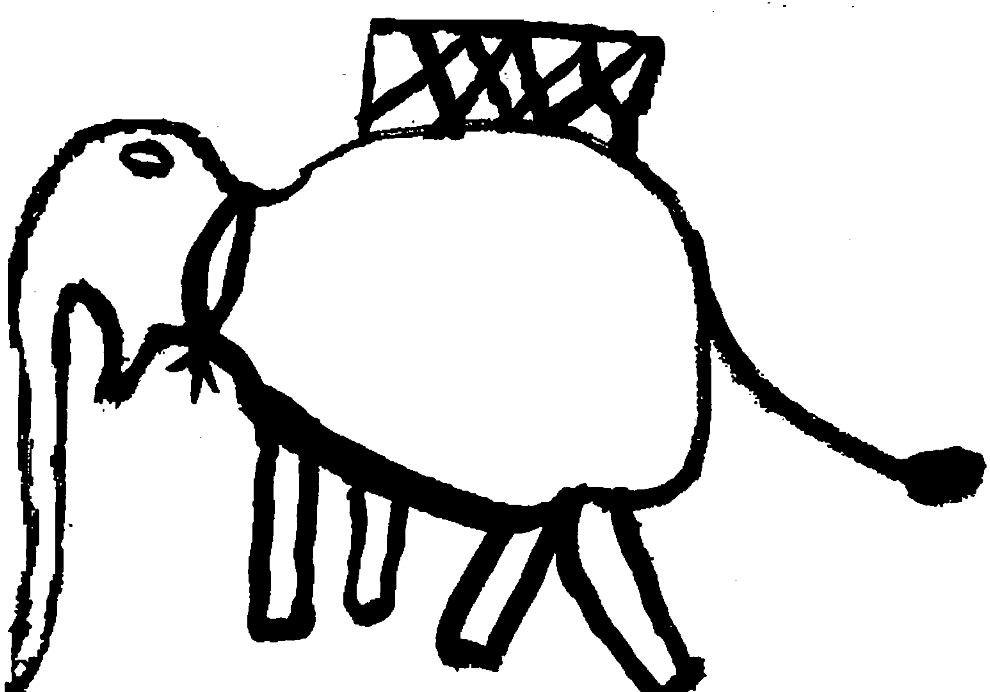


मच्छर से एक हाथी बोला
मुझे दुनिया की सैर करादे
मच्छर फिर हँसकर बोला
जाओ भैया टिकिट कटा लो

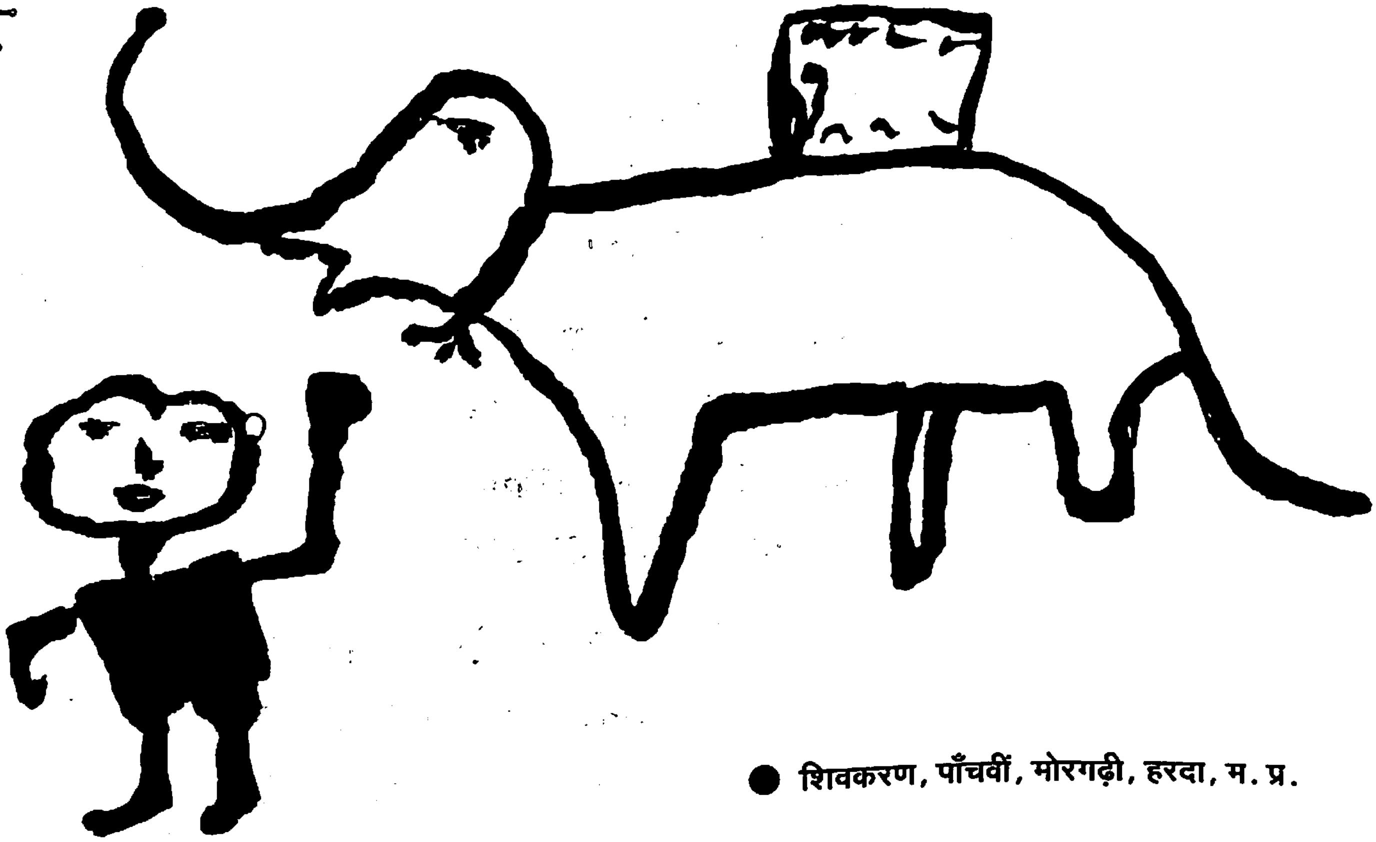
टिकिटघर में बैठी चींटी रानी
माँगे जो दो सौ टन पानी
चींटी बोली पड़ा अकाल
टूट गए मकड़ी के जाल

इतने में फिर खबर आई
मक्खी रानी उसको लाई
टिड्डे शेर में हुई लड़ाई
शेर ने मरहम पट्टी करवाई

● गीता जोठे, दुगारिया, होशंगाबाद, म. प्र.



● आशीष कुमार, सातवीं, मोरगढ़ी, हरदा, म. प्र.



● शिवकरण, पाँचवीं, मोरगढ़ी, हरदा, म. प्र.

मेरी बटेस्वर यात्रा

मेरी नानी एक गाँव में रहती हैं। छुट्टियों में हम गाँव गए। वहाँ बहुत मज़ा आया। तभी एक दिन नानी ने मुझे बताया कि हमारे गाँव के पास एक छोटा-सा गाँव और है जिसका नाम बटेस्वर है। उन्होंने मुझे बताया कि वहाँ पर यमुना नदी बहती है। उसके किनारे-किनारे शिवजी के एक सौ आठ मन्दिर हैं जो बहुत सुन्दर बने हुए हैं और बहुत पुराने हैं। बटेस्वर हमारे प्रधानमंत्री का गाँव है। वहाँ के मन्दिरों में से एक ऐसा शिव और पार्वती का मन्दिर है जो मोटे महादेव के नाम से जाना जाता है। उसके अन्दर जैसी विशालकाय मूर्ति है, वैसी देश में कहीं नहीं होगी। लेकिन मुझे एक बात का दुख है कि मैं पूरे 108 मन्दिर नहीं देख पाई। मेरी इच्छा है कि एक बार फिर से वहाँ जाऊँ और पूरे 108 मन्दिर देख के आऊँ। वहाँ लोगों ने यह भी बताया कि यहाँ पर कई फिल्मों की शूटिंग हुई थी जिनमें से एक फिल्म हीर राँझा भी है।

● तमन्ना पंकज, साहिबाबाद, गाज़ियाबाद, उ. प्र.

वीरता पुरस्कार

मेरा नाम पूर्णिमा तिवारी है। मैं युगान्तर पब्लिक स्कूल में पढ़ती हूँ। यह स्कूल छत्तीसगढ़ के राजनाँदगाँव जिले में है। हमारे स्कूल में सभी लोग एक साथ इकट्ठा होते हैं फिर प्रार्थना की जाती है। एक सुहानी सुबह हम सब लोग प्रार्थना करके कक्षा में गए। थोड़ी देर बाद प्रिंसीपल सर फिर हमको मैदान में बुलाए। हम सब लोग देखे कि प्रिंसीपल कुछ लोगों के साथ आ रहे हैं। उनके साथ एक छोटा लड़का भी आ रहा था। कुछ देर बाद पता चला कि उस लड़के को वीरता पुरस्कार मिला है। उस लड़के ने अपने एक साथी की जान बचाई थी। हुआ यह कि एक दिन वह लड़का कुछ दोस्तों के साथ खेलते-खेलते नदी के किनारे पहुँचा। उनके एक दोस्त का पैर कीचड़ में फँस गया। थोड़ी देर बाद वो डूबता हुआ गहरे पानी में चला गया। तभी उसने डूबते हुए लड़के के बालों को खींचकर उसे बचा लिया। इसलिए उस लड़के को वीरता पुरस्कार मिला।

● **पूर्णिमा तिवारी, पाँचवीं, राजनाँदगाँव, छत्तीसगढ़**

परीक्षा पर घड़ी

टिक टिक टिक टिक
सबको सबेरे जगाती हूँ
मैं हूँ एक घड़ी

जब परीक्षा सामने आ जाता
सबके मन में डर छा जाता
फिर सभी ओर मेरे लिए
ही भागदौड़ मच जाता

उसी समय मैं छात्रों को
टिक टिक कर होशियार करता
और वे बैठ जाते पढ़ने को

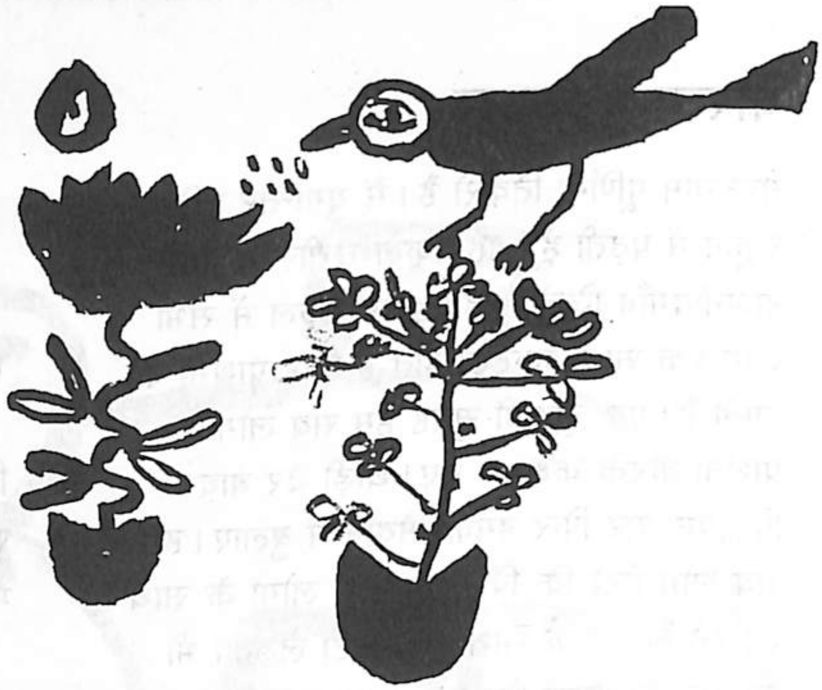
इसी तरह उनको मैं
परीक्षा के समय
पढ़ने में मदद करती

● **ग्याती ताई, नौ साल, पापुमपोर, अरूणाचल प्रदेश**





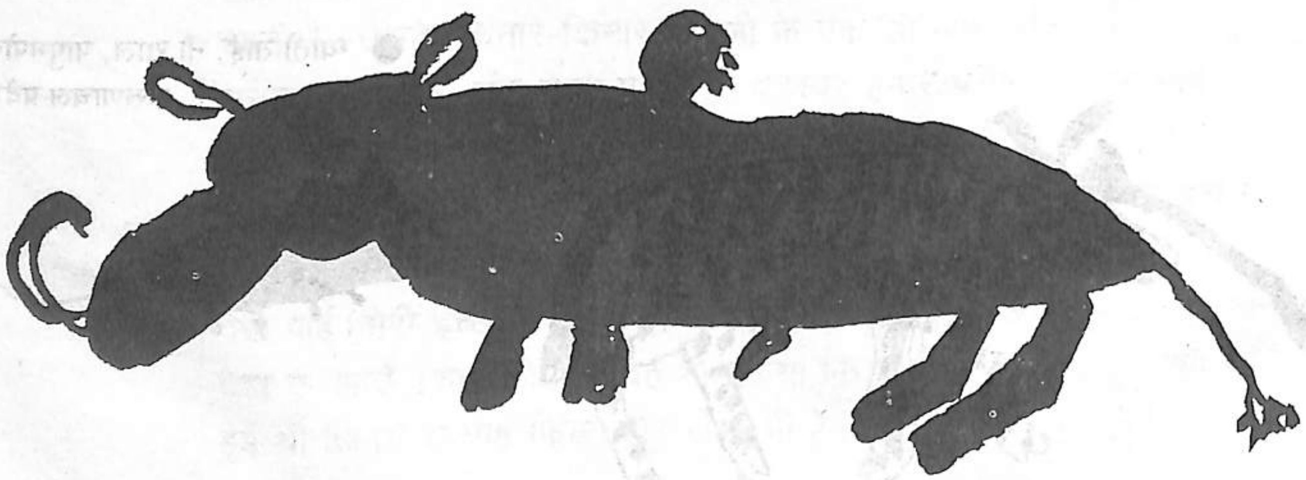
● **सदाराम, सातवीं, मोरगढ़ी, हरदा, म. प्र.**



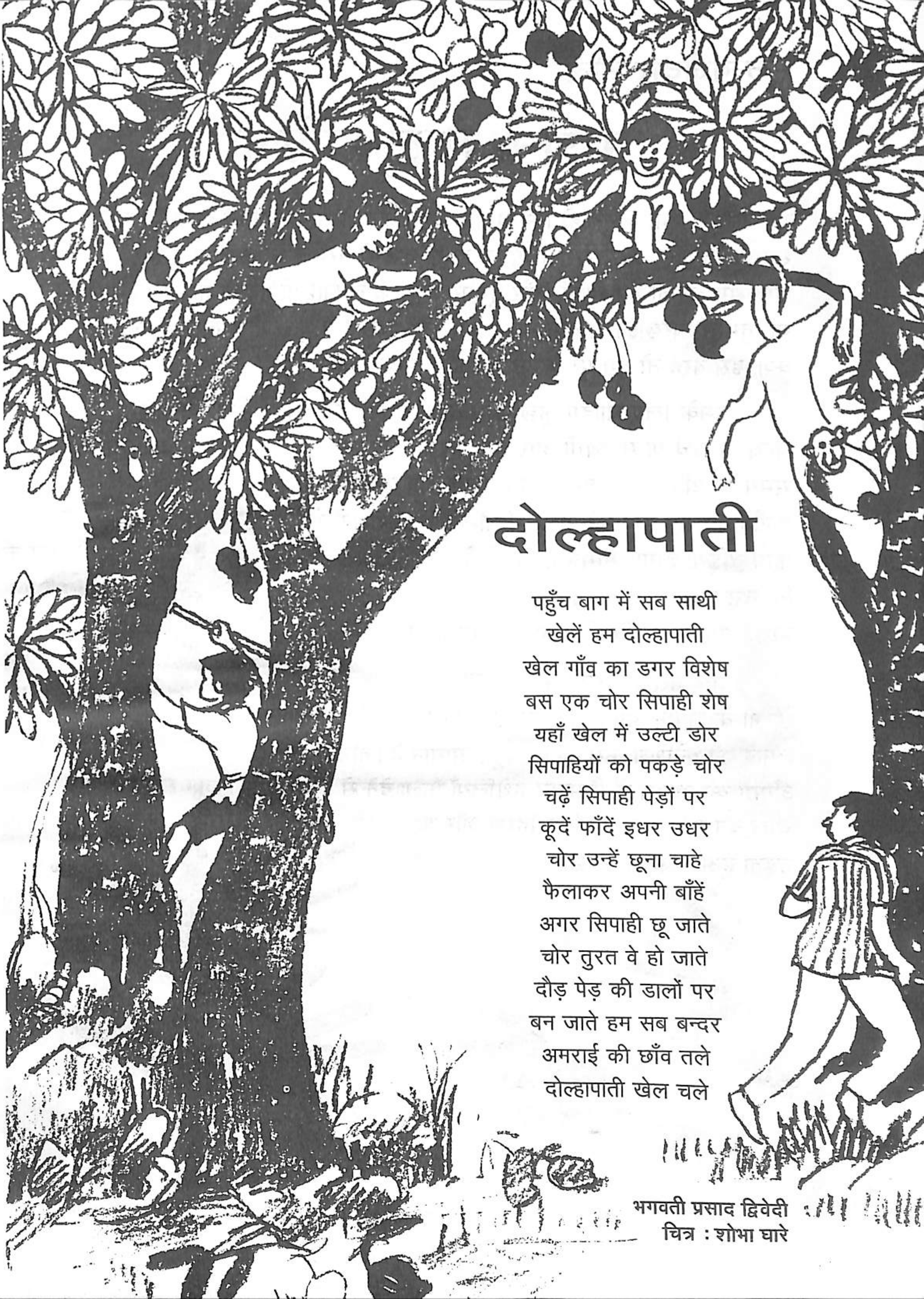
धरती जो है गोल

समझ नहीं आता है
धरती जो है गोल
लेकिन चिपटी चारों ओर
ये सब गड़बड़झाला क्या है
समझ नहीं आता है
कहाँ से है धरती पूरी गोल
कहीं नहीं दिखती है गोल
लेकिन चिपटी चारों ओर
समझ नहीं आता है
धरती कैसे है गोल

● अपाला मिश्र, चौथी, देहरादून, उत्तरांचल



दोनों चित्र ● राजकुमार सुचार, छठवीं, (पता नहीं लिखा)



दोल्हापाती

पहुँच बाग में सब साथी
खेलें हम दोल्हापाती
खेल गाँव का डगर विशेष
बस एक चोर सिपाही शेष
यहाँ खेल में उल्टी डोर
सिपाहियों को पकड़े चोर
चढ़ें सिपाही पेड़ों पर
कूदें फाँदें इधर उधर
चोर उन्हें छूना चाहे
फैलाकर अपनी बाँहें
अगर सिपाही छू जाते
चोर तुरत वे हो जाते
दौड़ पेड़ की डालों पर
बन जाते हम सब बन्दर
अमराई की छाँव तले
दोल्हापाती खेल चले

भगवती प्रसाद द्विवेदी
चित्र : शोभा घारे

एक मज़ेदार खेल

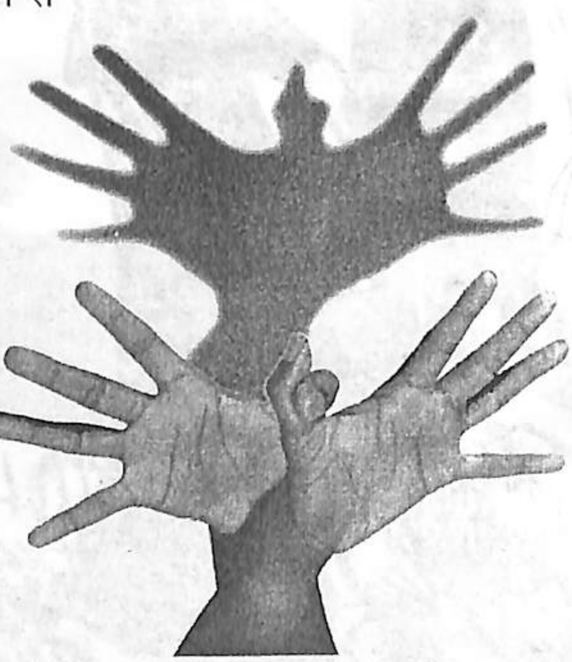
रोशनी से लुकाछिपी

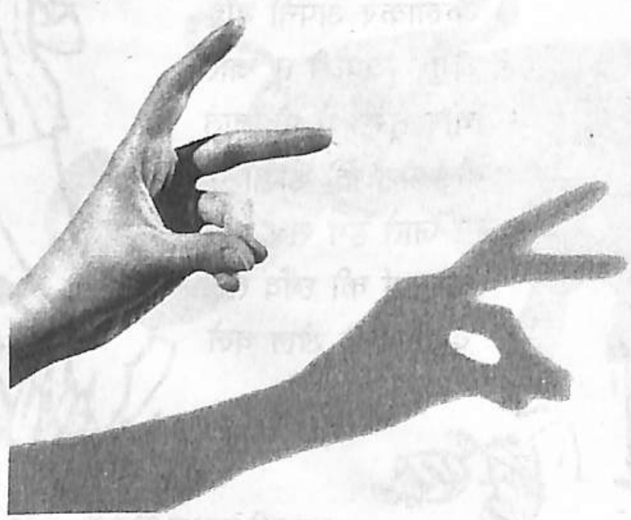
यह तो तुम सभी जानते हो कि तुम्हारा सबसे करीबी साथी तुम्हारी छाया है। चाहे रात हो या दिन, अगर रोशनी मौजूद हो तो तुम्हारी परछाई भी लगातार तुम्हारे संग-संग चलती है। रोशनी और तुम्हारे शरीर के लुकाछिपी का ही तो खेल है यह तुम्हारी परछाई। तो क्यों न इस बार इसी परछाई से कुछ खेल खेलें। खेल क्या, इस तरह तो तुम पूरे के पूरे नाटक तक खेल सकते हो।

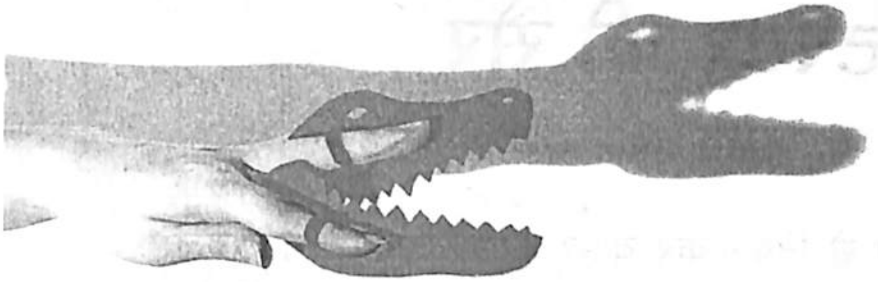
इसके लिए चाहिए कुछ खास नहीं। बस रोशनी का कोई ज़रिया जैसे बल्ब या टॉर्च या मोमबत्ती और शुरुआत के लिए तुम्हारे दोनों हाथ। ये खेल उस समय पर और अच्छी तरह से हो पाएगा जब बिजली की कटौती हो रही हो। घने अंधेरे में मोमबत्ती की रोशनी से काम बढ़िया होगा। मोमबत्ती को ऐसी जगह रख लो कि उसके सामने हाथ लाने पर तुम्हारे हाथ की परछाई सामने की किसी दीवार पर पड़ती हो।



अब ज़रा इन चित्रों को देखकर रोशनी के सामने अपने हाथों को इसी तरह जमाने की कोशिश करो। काम बहुत आसान है। दोनों अँगूठों को आपस में फँसाकर हथेलियाँ फैला देने से चील बन गई कि नहीं? फिर हिरण और यह उड़ता हुआ एक और पंछी।









देखो इधर एक कुत्ता भौंक रहा है! इसे बनाने की कोशिश करो। इस बीच कई सारी नई-नई आकृतियाँ भी बनने लगी होंगी तुमसे। इसी तरह अपने दोनों हाथों की उँगलियों को अलग-अलग तरह से जमाकर तुम हाथी, बिल्ली, ऊँट..... बहुत कुछ बना सकते हो।



अन्त में एक बात और। यहाँ कुछ चित्रों में तुम्हें उँगलियों के अलावा कुछ और भी दिखाई देगा। जैसे ऊपर के मगर के लिए कार्डबोर्ड के दो टुकड़ों का उपयोग किया गया है। उनमें आरी की तरह दाँत बनाकर तुम भी मगर बना सकते हो। यहाँ बाजू में खड़ा गीत सुना रहा गायक भी गत्ते और ऊन की मदद से बना है। ऊन से गायक के बाल और माइक का तार बना है। और इसी तरह गिटारवादक और यह ऐतिहासिक योद्धा भी बना है।

अब तो स्कूल खुलने में कुछ ही दिन बाकी हैं। इन बाकी के दिनों में खेलो परछाई के खेल और रच डालो अपने ही कुछ अनोखे नाटक। क्या-क्या किया यह हमें भी लिख भेजना।





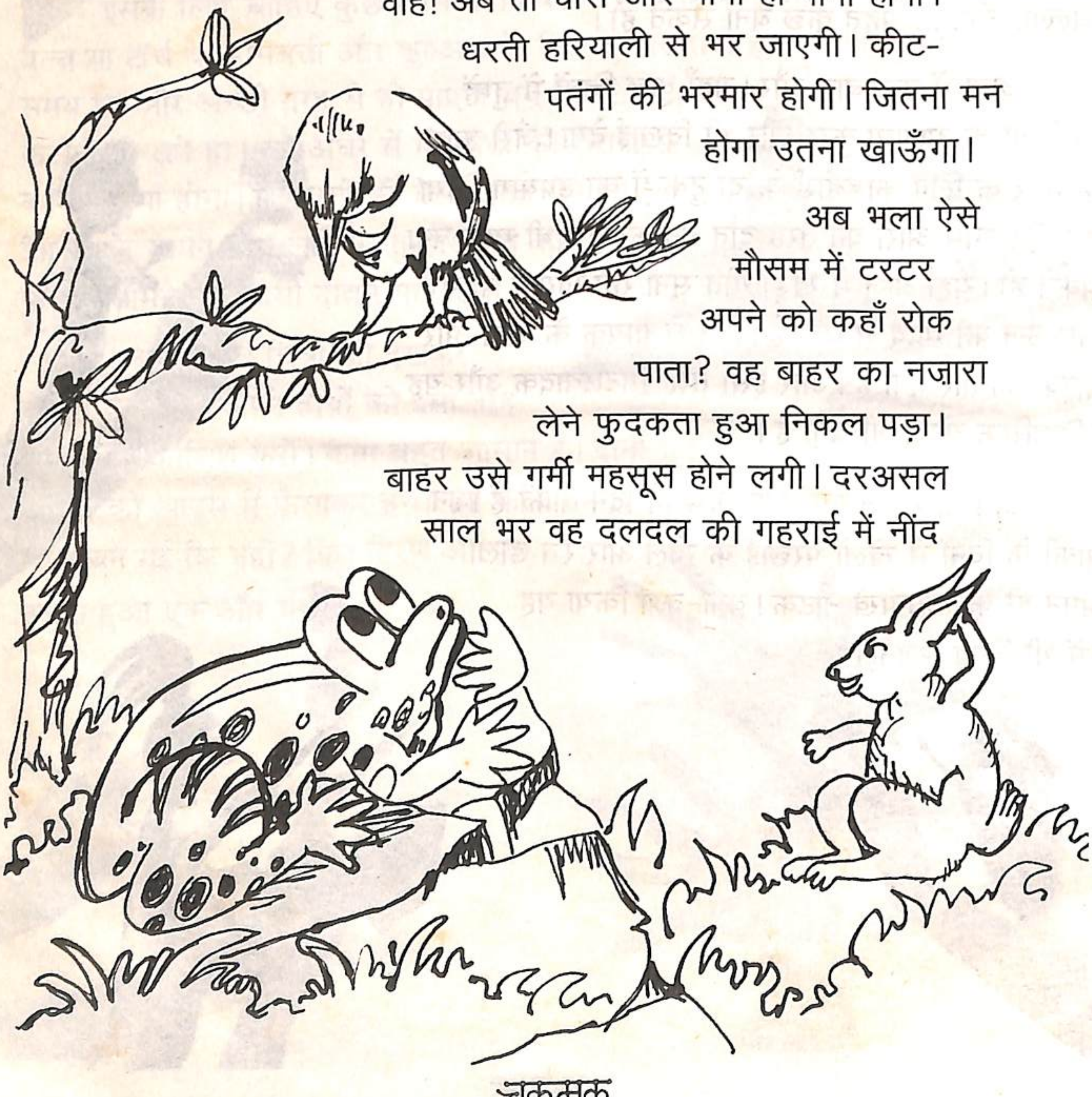
टरटर की सैर

मोहम्मद साजिद खान

टरटर मेंढक ने मिट्टी से निकलकर बाहर देखा। आकाश में बादल उमड़-घुमड़ रहे थे। खरगोश के बालों जैसे चमकदार और दादी के बालों जैसे दूधिया।

टरटर खुश हो गया। लगता है आज ही वर्षा होगी। इसका मतलब अब मेरे हँसने-खेलने, मौज मनाने के दिन आ गए। वाह! अब तो चारों ओर पानी ही पानी होगा। धरती हरियाली से भर जाएगी। कीट-पतंगों की भरमार होगी। जितना मन होगा उतना खाऊँगा।

अब भला ऐसे मौसम में टरटर अपने को कहाँ रोक पाता? वह बाहर का नज़ारा लेने फुदकता हुआ निकल पड़ा। बाहर उसे गर्मी महसूस होने लगी। दरअसल साल भर वह दलदल की गहराई में नींद



भर सोता रहा। इसलिए उसकी त्वचा मुलायम हो गई थी और बाहर का वातावरण गर्म लग रहा था।

तभी उसे एक चिड़िया दिखी। वह प्यास से परेशान चोंच को खोले, पानी की तलाश में थी। टरटर ने सोचा.... 'बाप रे ! कितनी कठिनाई का जीवन है इनका। जाड़ा-गर्मी-वर्षा कैसे सहती होंगी बेचारी! एक-एक दाने के लिए इन्हें दूर-दूर भटकना पड़ता होगा।'

अभी टरटर सोच ही रहा था कि उसके शरीर में ज़ोर की चुभन होने लगी। उसकी मुलायम त्वचा में नुकीले पत्थर गड़ रहे थे। टरटर ने तुरन्त अपने शरीर से एक लसलसा पदार्थ छोड़ा। उसे कुछ राहत महसूस हुई।

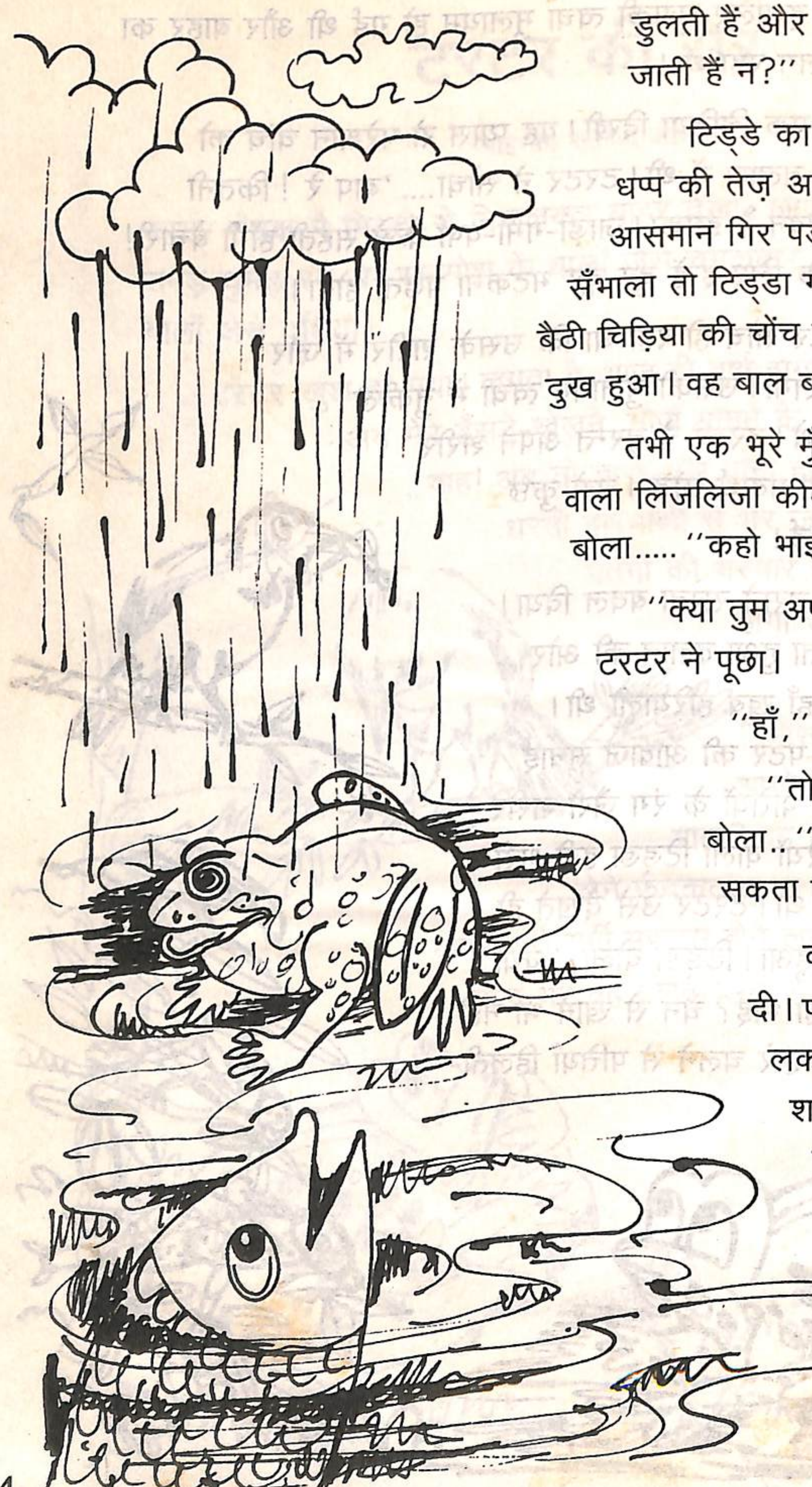


इस बार उसने रास्ता बदल दिया। अब वह फुदकता हुआ ढलान की ओर जा रहा था, जहाँ खूब हरियाली थी। तभी उसे चटर-पटर की आवाज़ सुनाई दी। उसने देखा पत्तियों के रंग जैसे शरीर पर कत्थई धारियों वाला टिड्डा हरी-भरी पत्तियाँ खा रहा था। टरटर उसे देखते ही आगे बढ़ने को हुआ। टिड्डा बोला, ''क्यों परेशान करते हो भाई? चैन से खाने भी नहीं देते। आखिर तुम्हारे चलने से पत्तियाँ हिलती-





डुलती हैं और मेरे मुँह से छूट जाती हैं न?''



टिड्डे का इतना कहना था कि धप्प की तेज़ आवाज़ के साथ मानो आसमान गिर पड़ा हो। टरटर ने होश सँभाला तो टिड्डा गायब था। वह डाल पर बैठी चिड़िया की चोंच में था। टरटर को बड़ा दुख हुआ। वह बाल बाल बचा था।

तभी एक भूरे मुँह और सफेद शरीर वाला लिजलिजा कीड़ा बाहर आकर बोला..... ''कहो भाई क्या देख रहे हो?''

''क्या तुम अपना घर बना रहे हो?'' टरटर ने पूछा।

''हाँ,'' कीड़े ने कहा।

''तो'' टरटर चहककर बोला..''क्या मैं तुम्हारा घर देख सकता हूँ?''

कीड़े ने उसे अनुमति दे दी। पर यह क्या? ढेर सा लकड़ी का बुरादा उसके शरीर पर चिपक गया। यह तो कहो उसने आँखों की झिल्ली चढ़ा ली थी। नहीं तो बुरादा आँखों में भी पड़ जाता।

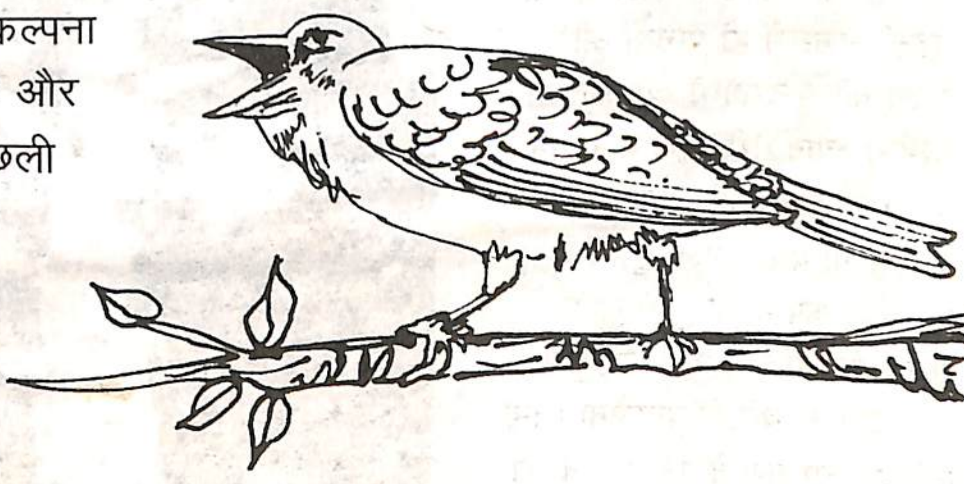
अब तक टरटर थक चुका था। तभी बारिश भी होने लगी। पानी का रेला बह चला। टरटर उसमें बहने लगा। और एक गहरी झील में जा पहुँचा। अचानक दो बड़ी मछलियाँ मुलायम-सा चारा देखकर उसकी ओर लपकीं। टरटर की जान सूख गई। उसने आँखें बन्द कर लीं।

फिर एक मछली ने उसका अगला धड़ और दूसरी ने उसका पिछला धड़ मुँह में दबाया और लगीं खींचने। टरटर दर्द से चिल्ला उठा। तभी वह छूटकर एक मछली के मुँह में चला गया और सीधा पेट में जा पहुँचा।



वहाँ बहुत गर्मी थी। पाचक अम्ल उसे गलाने लगे थे। वह चिल्ला उठा.... ''अरे कोई मुझे बचाओ! मेरा दम घुट रहा है!''

अचानक वह हड़बड़ाकर उठ बैठा। पर यह क्या था? वह तो अब भी दलदल में ही था। कोई मछली भी वहाँ नहीं थी। दरअसल बादलों की कल्पना में वह सपने देखने लगा था और कड़ाके की गर्मी से उसे मछली के पेट में होने का अहसास हुआ। अपने को सही सलामत देख उसने चैन की साँस ली!



* * *

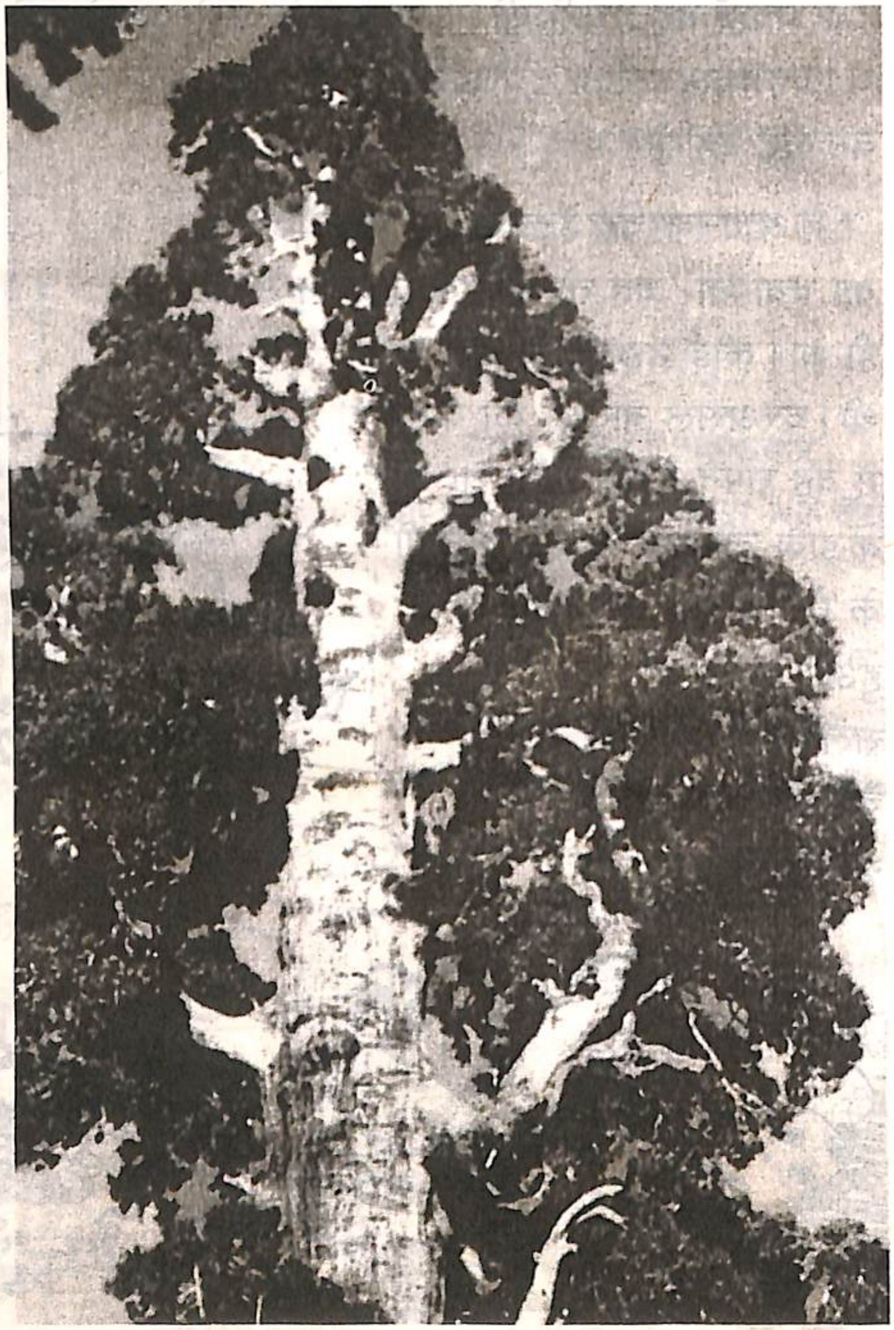


सभी चित्र : कैलाश दुबे

एक तने की चिट्ठी

प्यारे साथियो,

कैसे हो? परीक्षा से निपटकर तो तुम सब खेलकूद और मौज-मस्ती में लग गए होगे। गर्मी के मौसम में सारी पढ़ाई और होमवर्क की चिन्ताएँ छोड़कर तुम उछलकूद, कुल्फी, बर्फ के गोलों, ठण्डाई, लस्सी में डूबे हुए दिन काट रहे हो। चकमक भी तुम्हारे मौज-मस्ती वाले दिनों की सहयोगी है। इसलिए इसी के माध्यम से तुम्हें एक चिट्ठी लिख रहा हूँ।



कहीं तुम्हें चिट्ठी का शीर्षक अटपटा तो नहीं लगा? ज़रा सोचो तो सही, जब भी तुम अपने आसपास के पेड़-पौधे, वृक्ष, लताएँ, और झाड़ियाँ देखते हो तो पहली नज़र में ही पत्तियों और फूलों की सुन्दरता में खो जाते हो। तुम्हारा ध्यान मेरी तरफ यानी तने की तरफ शायद ही जाता होगा। जाएगा भी क्यों? भला मुझमें ऐसा क्या रंग-रूप है जो तुम्हें लुभा सके। पर आज मैं तुम्हें मेरे कुछ ऐसे गुणों के बारे में बताऊँगा जिन्हें जानकर तुम मुझे देखने परखने का आनंद ज़रूर उठाना चाहोगे।

अनेक हैं मेरे रंग-रूप ......

आमतौर पर तुम पेड़ों पर काले-काले और छाल से भरे तने देखते हो। पर वास्तव में मैं काला ही नहीं, कई रंगों में मिलता हूँ। यकीन न हो तो आगे ये सूची देखो!

काले तने ..... बबूल, नीम, आम, बाँस आदि
भूरे तने .... अमरूद, यूकेलिप्टस, पीपल, बरगद
हरे तने .... पालक, मैथी, पुदीना, बाँस
लाल तने .... राजगीरा, चौलाई
पीला तना .... बाँस

क्या तुमने ऊपर की सूची को गौर से देखकर एक बात पर ध्यान दिया? यह कि बाँस में मेरा रंग पीला, हरा और काला, तीनों में से कोई भी हो सकता है। है न बाँस के मज़े!

ये तो हुई रंगों की बात। पर तुमने शायद ध्यान दिया होगा कि मेरे ऊपर भी छाल होती है, जो कुछ तनों पर मोटी और कुछ पर कागज़ के समान पतली होती है। जैसे आम, नीम, बबूल में खूब मोटी छाल होती है और अमरूद और नीलगिरी (यूकेलिप्टस) में पतली छाल होती है। कुछ तनों की छालें थोड़ी चिकनी और गत्ते के समान मोटाई वाली होती हैं, जैसे जामुन, पीपल, बरगद आदि।

एक खास बात और। जब पुराने ज़माने में कागज़ नहीं थे तो मेरी छाल का उपयोग कागज़ के तौर पर लिखने के लिए किया जाता था। इस काम में कुछ खास पेड़ों की छाल का खूब उपयोग किया जाता था। इसे भोजपत्र कहते हैं। चित्र बनाने में भी भोजपत्र का सहारा लिया गया।

चलो बाहर बगीचे में चलते हैं। फिर तुम अलग-अलग पेड़-पौधों में मेरी सतह को ध्यान से देखना। मेरी सतह छाल के कारण खुरदरी हो सकती है या चिकनी भी। साथ ही अरण्डी, मोगरा आदि में मुझ पर रोएँ होते हैं। इन बारीक-बारीक रोमों के अलावा कई बार मुझ पर सफेद पावडर जैसा पदार्थ भी होता है।

मैं जड़ से अलग हूँ.....

यूँ तो जड़ और मैं एक ही बीज से बनते हैं और एक ही पेड़ या पौधा बनाते हैं। पर जड़ और मुझमें





काफी अन्तर होते हैं। तीन आम अन्तर मैं तुम्हें बताता हूँ। और तुम खुद ढूँढना।

- तना अमतौर पर हरा होता है जबकि लगभग सभी पौधों में जड़ें सफेद या भूरी होती हैं।
- जड़ों पर कोई जोड़ नहीं होते हैं। जबकि मुझ पर तुम कई सारे जोड़ या गठानें देख सकते हो।
- जड़ ज़मीन के अन्दर घुसती है जबकि तना ज़मीन से ऊपर की ओर बढ़ता है।



मैं चौकोर, तिकोना और चपटा भी ...

अधिकतर पेड़ पौधों में तुम मुझे गोल बेलन जैसा पाओगे। पर इससे हटकर भी मेरे कई एक से एक रूप हैं! ज़रा किसी तुलसी के पौधे को ध्यान से देखो। तुलसी, पुदीना, हरसिंगार और लटजीरा (आँधीझाड़ा) में मेरी कटान का आकार गोल नहीं चौकोर होता है। कुछ घासों में तो मैं तिकोने रूप में रहता हूँ। कद्दू की बेल में डँगालों की काट बहुकोणीय होती है और नागफनी की कुछ जातियों में मैं चपटा और मोटा भी हो जाता हूँ। कई बेलों और पौधों में तुम मुझे खोखली नली के समान पाओगे।

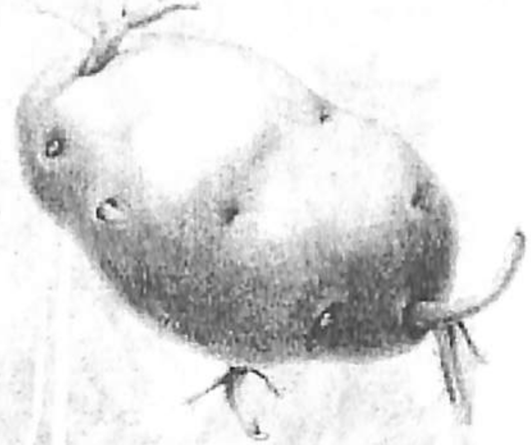
रस और दूध से भरा ..

यह मौसम तो गन्ने का रस पीने का है। गन्ने में तुम मुझे मीठे रस से भरा पाओगे। और बेशरम, अकाव और कनेर में मेरे अन्दर दूध जैसा गाढ़ा द्रव भरा देख सकते हो।



मैं कमज़ोर भी, मज़बूत भी.....

मेरी मज़बूती से तो तुम निश्चित ही वाकिफ होगे। पुराने ज़माने से लेकर आज तक अनेक महलों, इमारतों का भार मैं ही ढोता आया हूँ। कभी खम्भों के रूप में तो कभी पाट के रूप में। मुझे तराशकर कलाकारों ने अच्छे-अच्छे फर्नीचर भी बनाए हैं। भले ही मेरी जगह आज इस्पात के गार्डरों ने ले ली है, पर तुम्हारी मानव जाति ने कई चीज़ों को बनाने में मेरी मज़बूती का सहारा लिया है। एक तरफ तो मैं इतना मज़बूत हूँ कि मुझसे



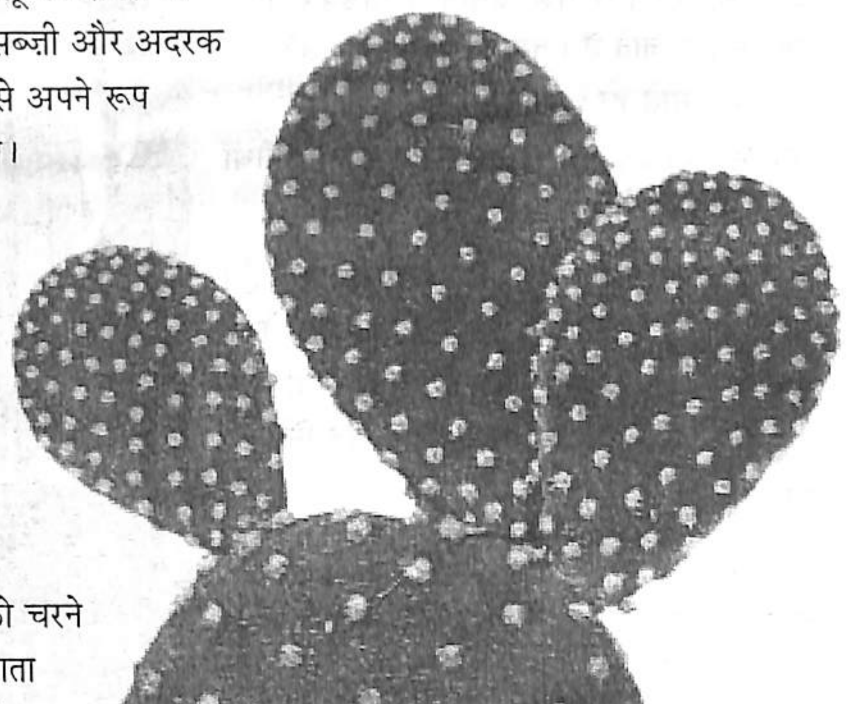


बने कई पुराने पुलों पर आज भी टनों वज़न वाली रेलगाड़ियाँ दौड़ रही हैं। पर दूसरी तरफ मैं इतना कमज़ोर भी हूँ कि अपने ऊपर लगे फूल-पत्तियों का वज़न भी नहीं उठा सकता। यही कारण है कि मैं अंगूर, गिल्की, लौकी, तरबूज, कद्दू आदि में या तो ज़मीन पर रेंगता हूँ या बड़े मजबूत तने के सहारे लिपटकर चलता हूँ।

मैं बहरूपिया हूँ.....

ऐसा ही नहीं कि मैं लम्बा, चपटा, मोटा, पतला और ठिगना हूँ। मैं गोल-मटोल भी हो सकता हूँ। आलू तो तुम हमेशा ही देखते हो। तुम्हें यह जानकर शायद आश्चर्य होगा कि आलू की शक्ल में असल में मैं एक तना ही हूँ। अरबी नाम की सब्ज़ी और अदरक भी एक तरह के तना ही हैं। जब मैं इस तरह से अपने रूप बदल सकता हूँ तो एक बहरूपिया ही तो हुआ।

कुछ पौधों में तो पत्तियाँ मेरी नकल करती हैं। केले में तुम जो लम्बा मोटा तना देखते हो, वास्तव में वो असली तना नहीं है। वह तो पत्तियाँ अपने निचले हिस्सों को एक दूसरे पर लिपटाकर तने जैसा बना लेती हैं।



मैं पेड़-पौधों का सुरक्षा गार्ड हूँ...

कई सारे पेड़-पौधों में उनके कोमल हिस्सों को चरने वाले पशुओं से बचाने के लिए मैं काँटे भी बनाता हूँ। इस तरह से इन कोमल भागों का बचाव होता है। तो ज़ाहिर है मैं पौधों का सुरक्षा गार्ड भी हूँ।

अकेला भी, बँटा हुआ भी.....

अक्सर तुमने देखा होगा कि ज़मीन से थोड़ा ऊपर मैं दो या अधिक हिस्सों में बँट जाता हूँ। पर थोड़ा याद करो खजूर, नारियल, सुपारी, ताड़ आदि कितने ही पेड़ों में तुमने शाखें ही नहीं देखी होंगी। ज़रा याद करके शाखों और बिना शाखों वाले पेड़ों की सूची तैयार करो।



मैं क्या करता हूँ...

चलो यह भी बता दूँ कि मेरे काम क्या हैं? अव्वल तो जड़ के द्वारा मिट्टी से लिए गए पानी और खनिज पदार्थों को ऊपर फूल, पत्तियों और फलों तक भेजना मेरा प्रमुख काम है। दूसरे, पत्तियाँ जो भोजन बनाती हैं उसे जड़ तक पहुँचाता हूँ। तीसरे जब बीज अंकुरित होकर उगते हैं तब मैं हरा होता हूँ। उस दौरान हरी पत्तियों की तरह सूरज की रोशनी और नमी की मौजूदगी में मैं ही भोजन बनाता हूँ।



आलू, अदरक, जमींकन्दों और प्याज में मेरे अन्दर भोजन का संग्रह किया जाता है जिससे मैं फूल जाता हूँ। ऐसे ही पोदीना, गन्ने, अदरक, आलू में मुझे ज़मीन में गाड़कर नए पौधे उगाए जाते हैं। तुम भी तो गुलाब की कलम लगाते हो। आखिर वह भी तो एक तना ही है। इन सब कामों के अलावा मैं पौधों के सभी हिस्सों का वज़न भी उठाता हूँ।

चलते-चलते एक बात और कहना चाहता हूँ। मेरी चिट्ठी का जवाब तुम सब चकमक के पते पर भेजना। बताना पढ़कर कैसा लगा। मैं पढ़ लूँगा। शायद कभी तुम्हें फिर खत लिख डालूँ!

प्यार के साथ,
तुम्हारा, तना (**उर्फ कमलकिशोर कुम्भकार**)

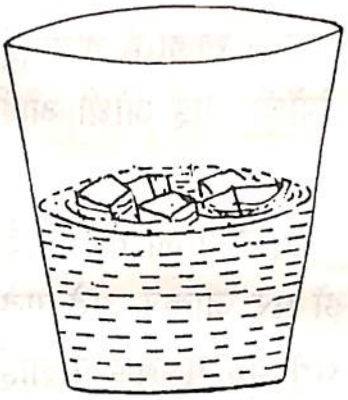
इस लेख में आए चित्र द सीक्रेट लाइफ ऑफ प्लान्ट्स; प्लान्ट्स, एग्रीकल्चर एंड ह्यूमन सोसायटी; द कम्प्लीट बुक ऑफ कैकटाइ एंड सक्युलेंट एवं द चिल्ड्रन्स ट्रेज़री ऑफ प्लान्ट्स से साभार लिए गए हैं।

.....ऐसा क्यों हुआ??

कागज़ की दो कतरनें, एक माचिस, एक गिलास और बर्फ के कुछ टुकड़े! बस ये तीन चार चीज़ें जुटा लो। फिर कुछ मज़ेदार करते हैं......!

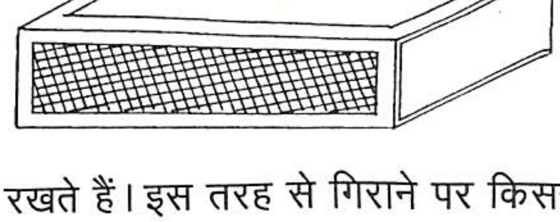


1. सबसे पहले अंदाज़न पन्द्रह सेण्टीमीटर लम्बी और पाँच सेण्टीमीटर चौड़ी कागज़ की दो पट्टियाँ काट लो।
2. इन दो पट्टियों को चार से छह सेण्टीमीटर का फासला रखते हुए दोनों हाथों से पकड़ लो।
3. अब तुम्हें पट्टियों के बीच में तेज़ी से फूँकना है। पर पहले अंदाज़ा लगाओ कि फूँकने पर कागज़ की पट्टियाँ दूर भागेंगी या कि पास-पास आएँगी?
4. अब जाँच करके देखो। क्या हुआ?
5. तुम्हें क्या लगता है? ऐसा क्यों हुआ?



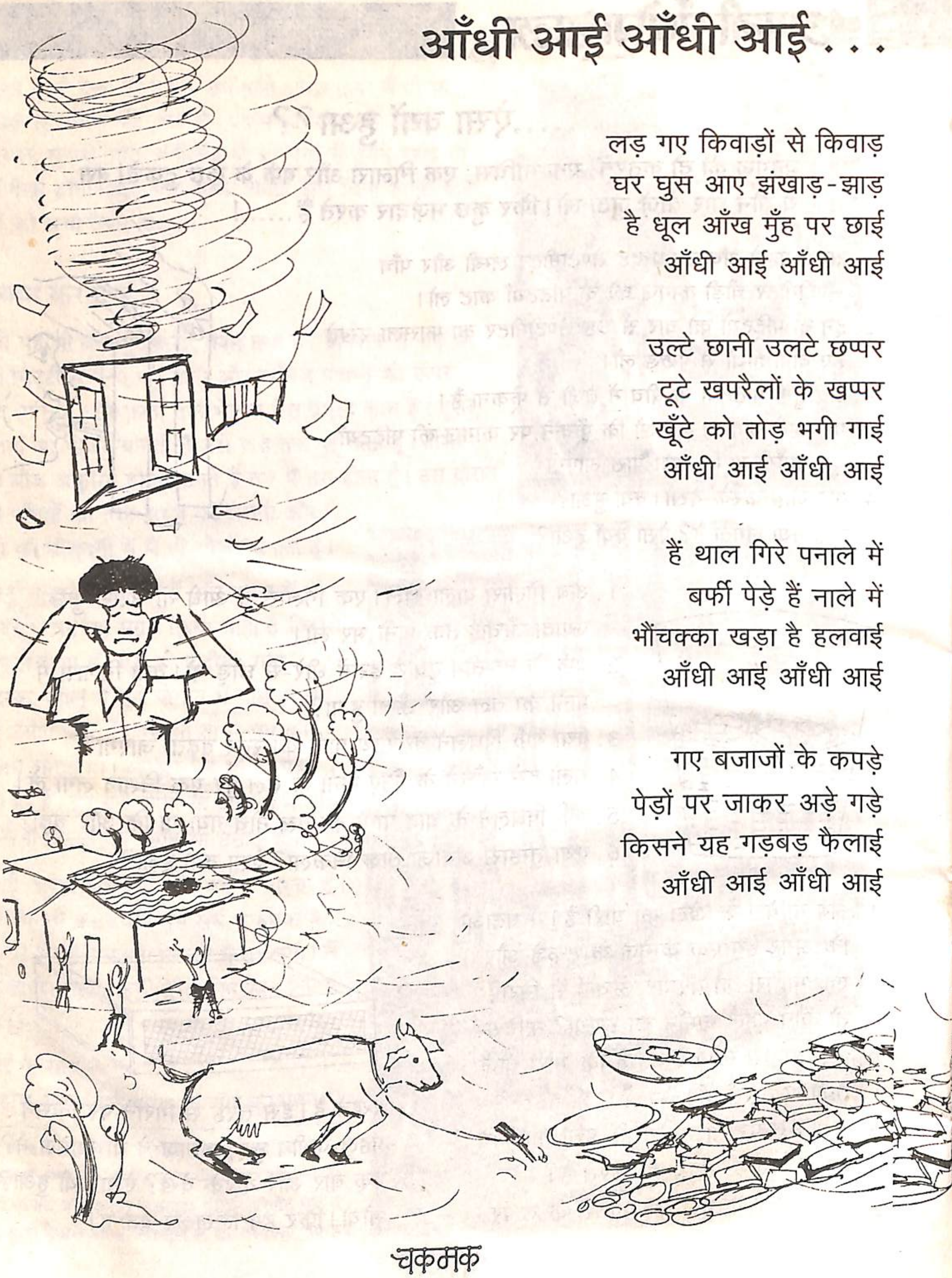
1. अब गिलास वाला खेल। एक गिलास में आधे या उससे कुछ ज़्यादा ऊँचाई तक पानी भर लो।
2. बर्फ के दो-तीन टुकड़े इसमें धीरे-से छोड़ दो। क्या गिलास में पानी का तल और ऊँचा हुआ?
3. क्या बर्फ पिघलने के साथ पानी का स्तर बढ़ता जाएगा?
4. चलो इसे जाँचने के लिए पानी के तल पर एक निशान लगा लें।
5. बर्फ पिघलने के बाद पानी का तल नीचे गया या कि और चढ़ा?
6. क्या तुम्हारा अंदाज़ा ठीक निकला? ऐसा क्यों हुआ?

1. अब माचिस के खेल की बारी है। ये बताओ कि अगर हम एक कागज़ के टुकड़े और एक माचिस को बराबर ऊँचाई से गिराएँ तो कौन पहले ज़मीन को छुएगा? माचिस?
2. क्या तुम्हारा मतलब यह है कि भारी चीज़ें तेज़ी से गिरती हैं।
3. चलो इस पर तो सोचेंगे ही, इसी गतिविधि को ज़रा तोड़-मरोड़कर करते हैं।
4. इस कागज़ के पुर्ज़े को माचिस के ऊपर रखते हैं। इस तरह से गिराने पर किसने पहले ज़मीन छुई, कागज़ ने या माचिस ने?



5. एक बार और करके देखें? ऐसा क्यों हुआ? सोचो। फिर हमें लिखकर बताना।

आँधी आई आँधी आई . . .



लड़ गए किवाड़ों से किवाड़
घर घुस आए झंखाड़-झाड़
है धूल आँख मुँह पर छाई
आँधी आई आँधी आई

उल्टे छानी उलटे छप्पर
टूटे खपरैलों के खप्पर
खूँटे को तोड़ भगी गाई
आँधी आई आँधी आई

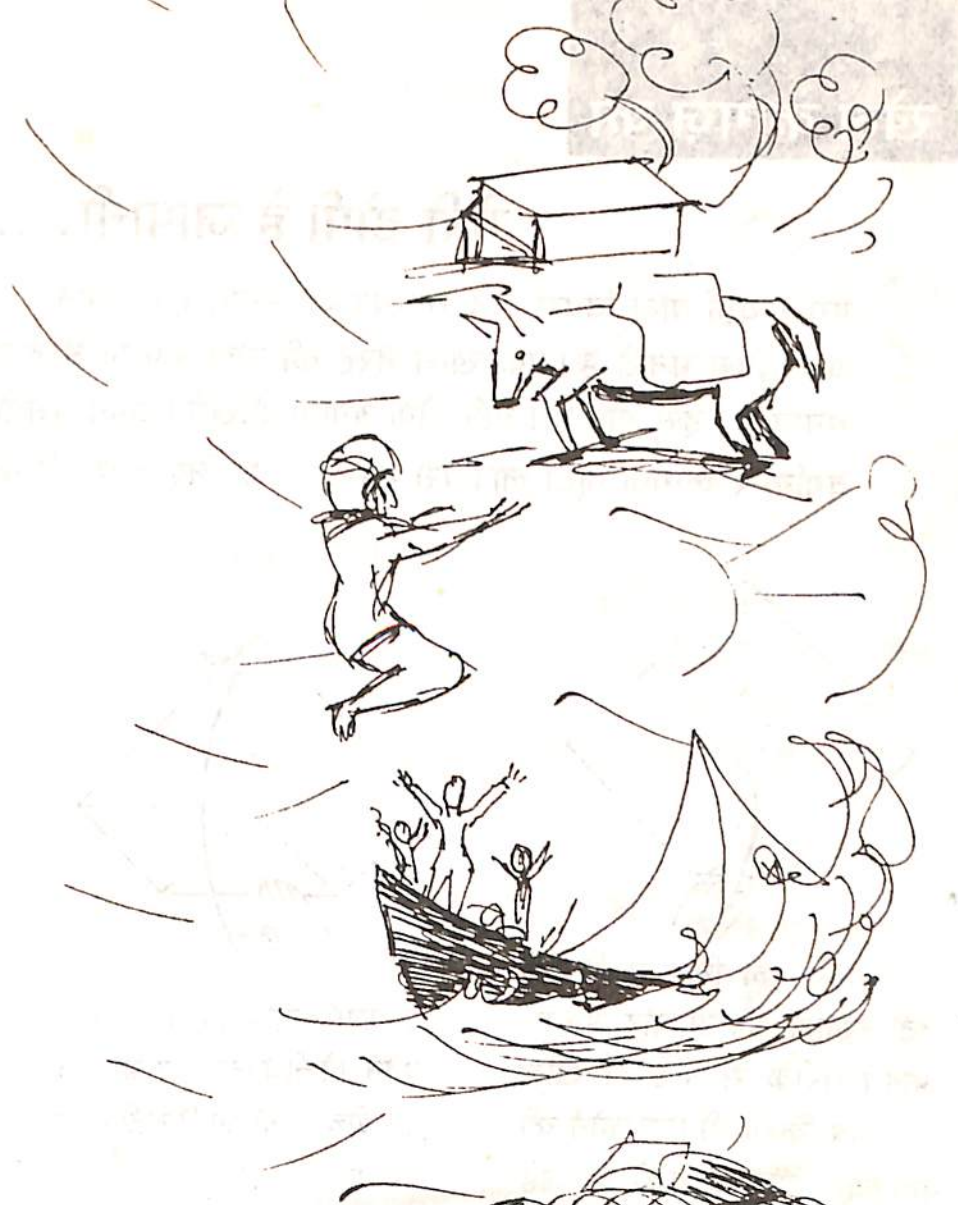
हैं थाल गिरे पनाले में
बर्फी पेड़े हैं नाले में
भौंचक्का खड़ा है हलवाई
आँधी आई आँधी आई

गए बजाजों के कपड़े
पेड़ों पर जाकर अड़े गड़े
किसने यह गड़बड़ फैलाई
आँधी आई आँधी आई

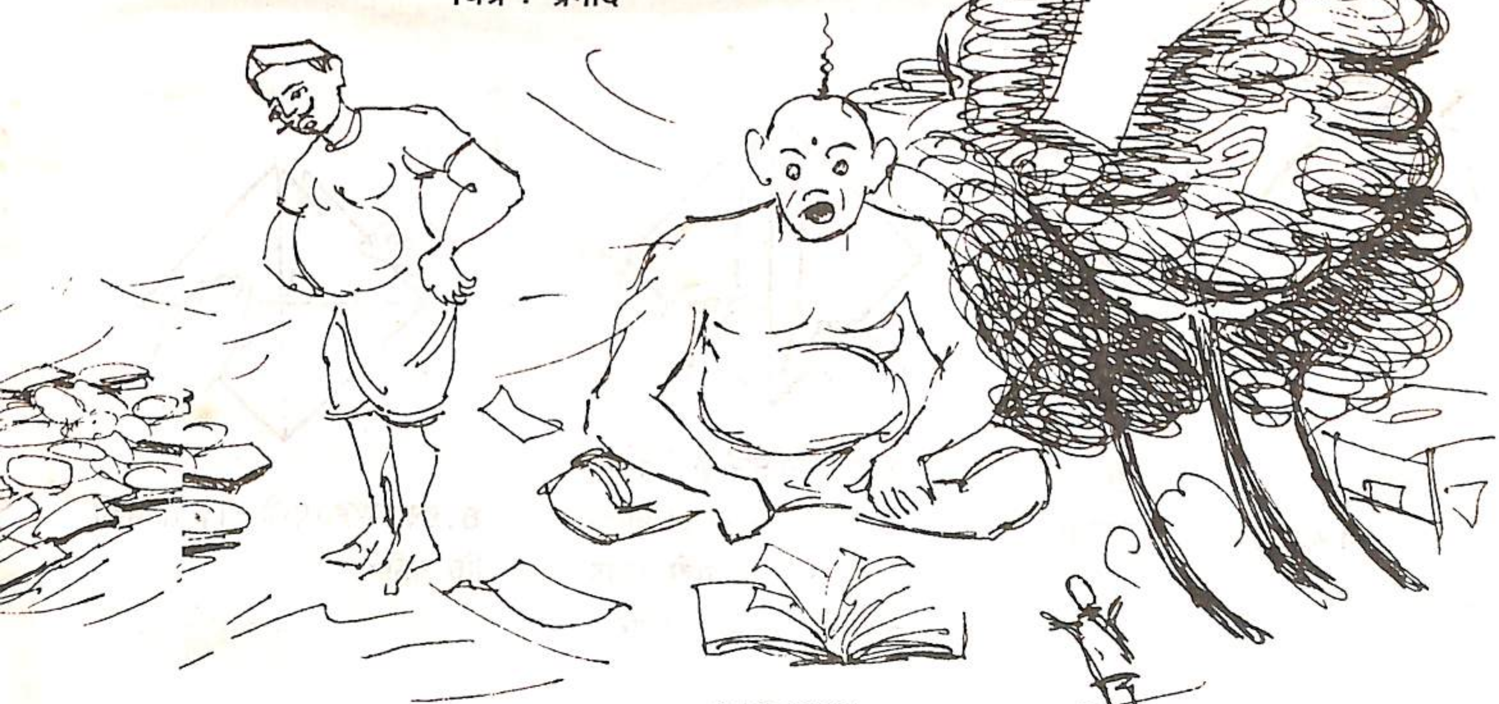
उड़ गए किताबों के पन्ने
पण्डितजी बैठे चौकन्ने
सब भूल गए अब चतुराई
आँधी आई आँधी आई

नदियों में उलटी उधर नाव
मल्लाह गए सब भूल दाँव
हैं पाल न देते दिखलाई
आँधी आई आँधी आई

धोबी का गधा छोड़ हाट
भग चला पाँव में कसे खाट
सब डरे कौन आफत आई
आँधी आई आँधी आई



सोहनलाल द्विवेदी
चित्र : प्रमोद

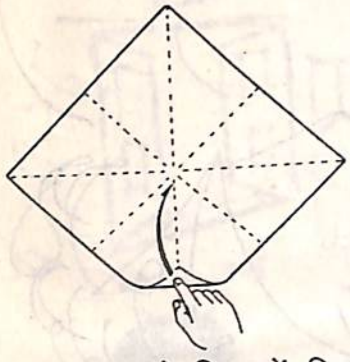


खेल कागज़ का

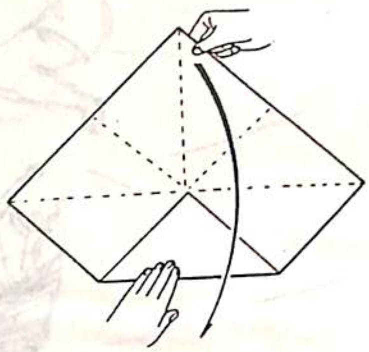
मेरी टोपी है जापानी....



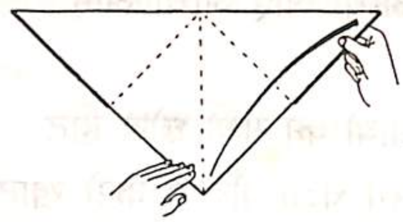
हमारे यहाँ बाल दिवस 14 नवम्बर को मनाते हैं। जापान में 5 मई को यह दिवस मनाते हैं। एक खास तरह की टोपी वहाँ के बच्चे इस मौके पर बनाते हैं। इस बार हम वही टोपी बनाना सीखेंगे। अपने पसंदीदा रंग का बड़ा-सा वर्गाकार कागज़ जुटा लो। वैसे शुरुआत के लिए अखबारी कागज़ बुरा नहीं है।



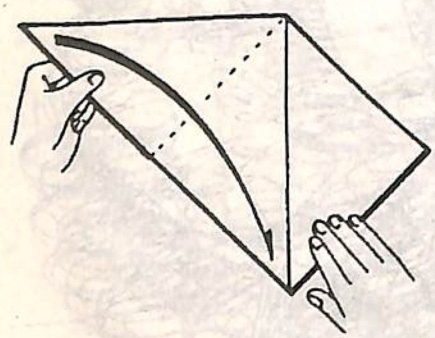
1. कागज को चित्र में दिखाई टूटी रेखाओं पर से चार अलग-अलग तरीके से मोड़कर खोल लो। अब किसी भी एक कोने को पकड़कर ठीक बीच में बन रहे बिन्दु पर लाते हुए मोड़ लो।



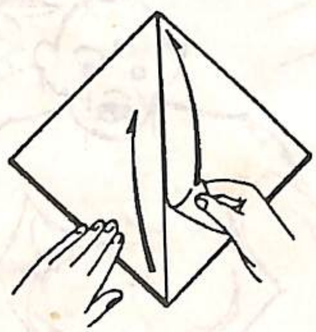
2. इस तरह। अब ऊपर वाले कोने को नीचे लाते हुए आकृति को बीच वाली आड़ी टूटी रेखा पर से मोड़ लो।



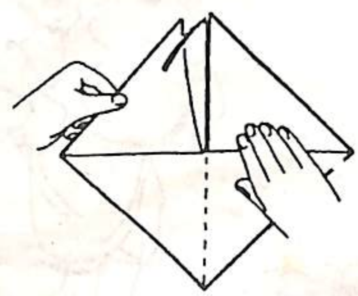
3. अब दाएँ और बाएँ कोनों को बीच के नीचे वाले कोने तक लाते हुए मोड़ना है। पहले दायाँ...



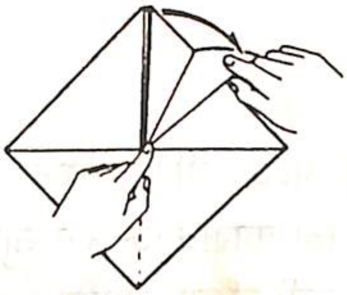
4. और फिर बायाँ। यहाँ से हमने चित्रों को कुछ बड़ा करके दिखाया है।



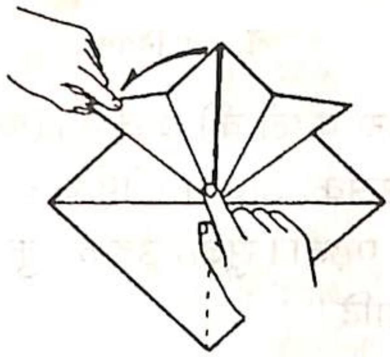
5. अब चित्रानुसार इन्हीं कोनों को ऊपर की तरफ ले जाना है। इसके लिए ऊपरी सतह को बीच से आधा मोड़ना होगा।



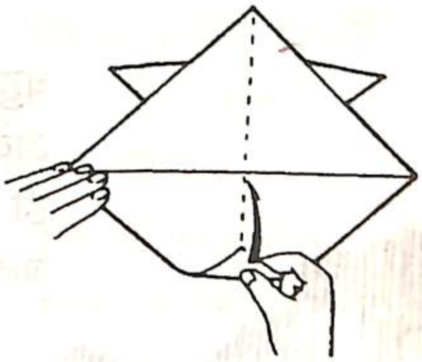
6. इस तरह। ऐसी आकृति मिली कि नहीं?



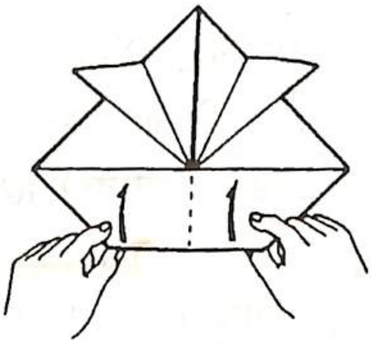
7. अब इन्हीं कोनों को एक बार और मोड़ते हुए बाहर निकाल दो। ताकि टोपी में से दो सींग निकल आएँ! ये दाएँ वाला मोड़!



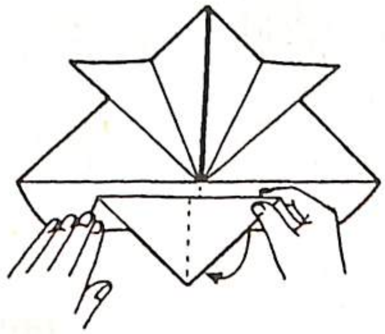
8. और फिर ये बाएँ वाला।



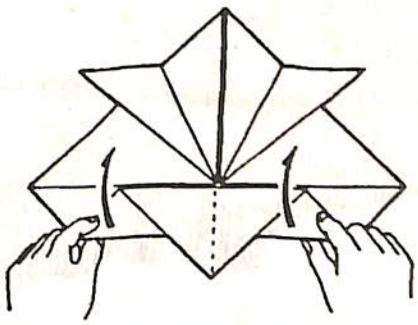
9. इसे पलटोगे तो कुछ ऐसी आकृति दिखेगी। इसके नीचे के कोने को मोड़ते हुए बीच वाली रेखा तक ले जाओ।



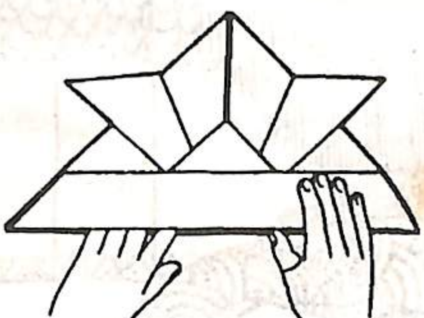
10. आकृति को फिर पलट लो। निचले हिस्से को पकड़कर निचले सिरे को बीच की रेखा तक ले जाते हुए मोड़ दो।



11. पीछे की तरफ का तिकोना इस तरफ आ जाएगा।



12. अब नीचे के इसी हिस्से को फिर बीच वाली रेखा से ऊपर की तरफ मोड़ दो।



सारो मोड़ों को अच्छी तरह दबा लो। बस, तैयार हो गई टोपी! चाहो तो थोड़ी बहुत उठापटक करके भी देख लो। हो सकता है... एक नए तरह की टोपी तैयार हो जाए।



तो कैसी लगी हमारी जापानी टोपी!

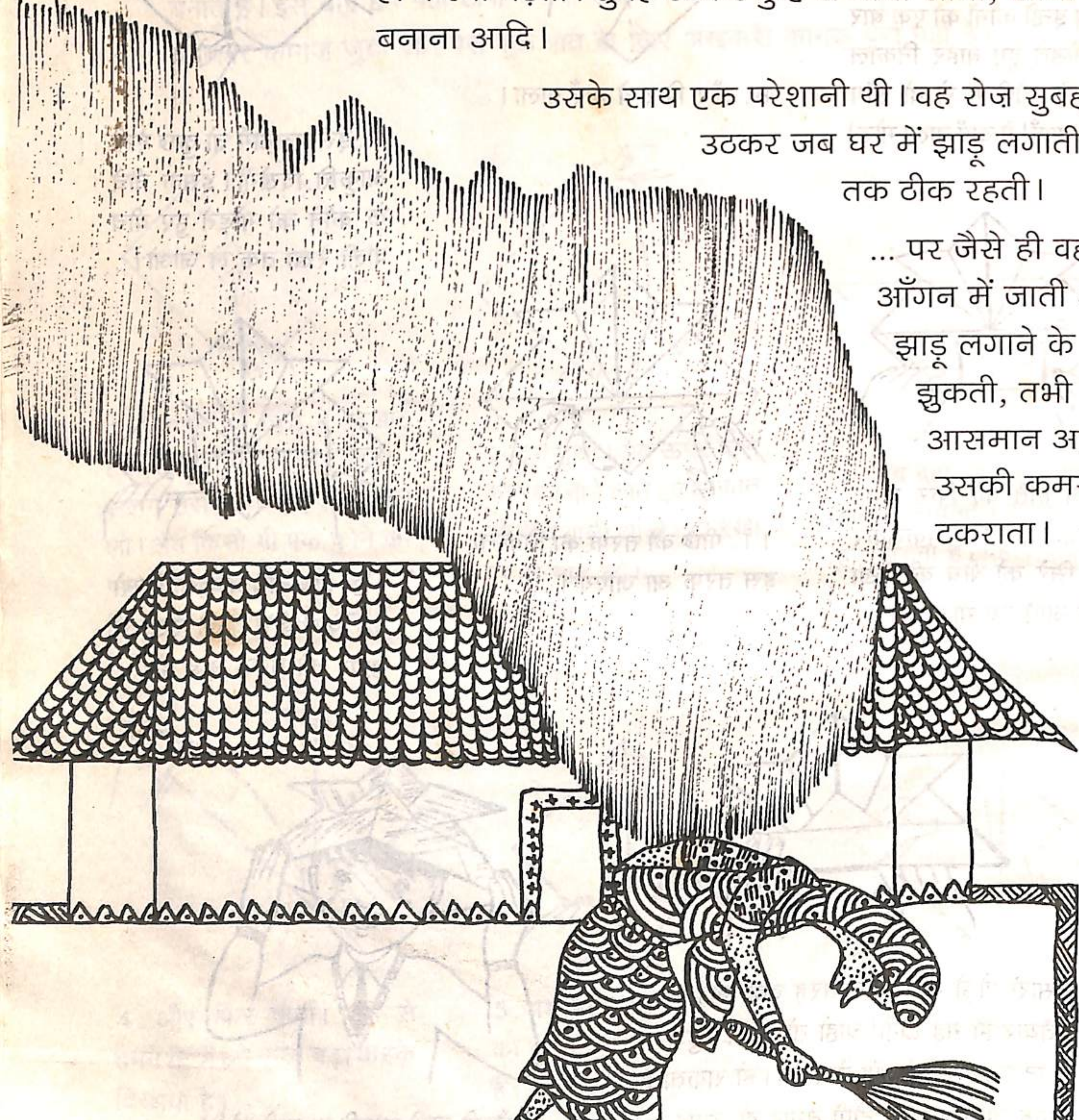
चाँद वाली अम्मा

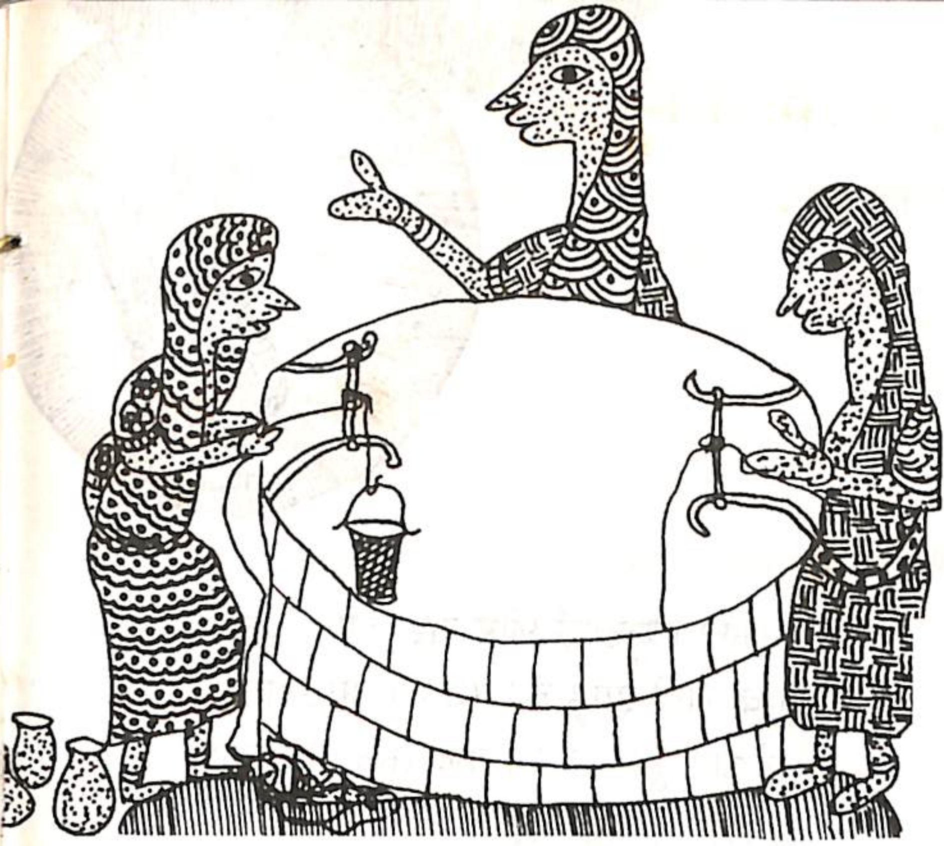
डॉ. तारा निगम

बहुत समय पहले की बात है। एक बूढ़ी अम्मा थी। बिल्कुल अकेली! उसका अपना कोई न था। घर का कामकाज उसे खुद ही करना पड़ता। सुबह उठकर कुएँ से पानी लाना, खाना बनाना आदि।

उसके साथ एक परेशानी थी। वह रोज़ सुबह उठकर जब घर में झाड़ू लगाती तब तक ठीक रहती।

... पर जैसे ही वह आँगन में जाती और झाड़ू लगाने के लिए झुकती, तभी आसमान आकर उसकी कमर से टकराता।





अम्मा उसे घूरकर देखती तो वह थोड़ा हट जाता। फिर वह जैसे ही दुबारा झुकती, आसमान फिर अपनी हरकत दुहराता।

एक दिन, दो दिन, तीन दिन। लगातार यही क्रम चलता रहा। अम्मा झाड़ू लगाए और आसमान उसे तंग करे।



एक दिन कुएँ पर पानी भरने को लेकर अम्मा का किसी और से झगड़ा हो गया। अम्मा ज़रा गुस्से में थी। वह झाड़ू उठाकर आँगन में गई। और जैसे ही झुकी आसमान ने अपनी आदत के अनुसार उसे फिर छेड़ा।

अम्मा ने आव देखा न ताव और कसकर एक झाड़ू आसमान को दे मारी। आसमान झट हट गया। पर वह भी अपनी आदत से मजबूर दूसरी बार फिर अम्मा के झुकते ही टक्कर मारने लगा। अम्मा ने फिर पूरी ताकत से उस पर वार किया।

आसमान को शरारत सूझी। उसने झाड़ू पकड़ ली। उधर अम्मा भी झाड़ू पकड़े थी। रस्साकशी शुरू हो गई। झाड़ू का ऊपर वाला हिस्सा आसमान पकड़े हुए था तो नीचे वाला अम्मा! दोनों छोड़ने को तैयार नहीं थे।





अम्मा चिल्लाई छोड़ मेरा झाड़ू ! मेरे पास एक यही झाड़ू है। तब भी आसमान ने नहीं छोड़ा। बूढ़ी अम्मा कब तक रस्साकशी करतीं.... थक गईं।

आसमान ने झाड़ू खींचना नहीं छोड़ा। अब वह झाड़ू के साथ ऊपर उठने लगा। उसके साथ साथ झाड़ू पकड़े हुए अम्मा भी ऊपर जाने लगीं। वह चिल्लाई .. मुझे नीचे छोड़ दे!

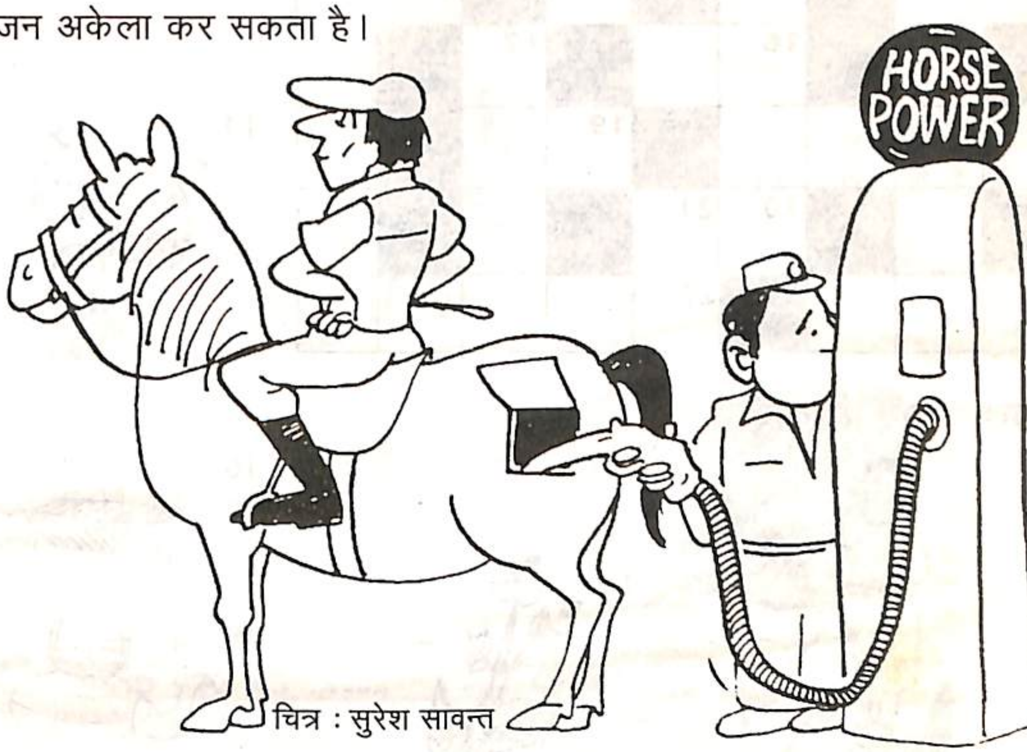
अम्मा अब मैं तुम्हे नहीं छोड़ूँगा। ले चलूँगा ऊपर। वहीं झाड़ू लगाना। अम्मा अब झाड़ू नहीं छोड़ सकती थी.... क्योंकि वह बहुत ऊपर पहुँच चुकी थी। तभी उसे वहाँ चाँद दिख गया। झट अम्मा ने पैर बढ़ाया और चाँद पर चढ़ गई। पर झाड़ू नहीं छोड़ी। आसमान को फिर शरारत सूझी। उसने सोचा अम्मा तो चाँद पर चढ़ गई है। यदि चाँद उसकी मदद करेगा तो मैं हार जाऊँगा। इसे यहीं रहने दूँ और ऐसा सोचकर उसने झाड़ू छोड़ दिया। अम्मा झाड़ू सहित चाँद पर रह गई। वह इतनी थक गई थी कि झाड़ू पकड़े पकड़े ही चाँद पर बैठ गई। आसमान ऊपर चला गया। उस दिन से आज तक बूढ़ी अम्मा झाड़ू पकड़े चाँद पर बैठी है।

सभी चित्र : परशाद सिंह

एक हॉर्स पावर का मतलब.....

तुमने अक्सर सुना होगा फलाँ मशीन का इंजन इतने हॉर्स पावर का है और फलाँ इतने हॉर्स पावर का। ....क्या होता है यह हॉर्स पावर?

पहले पहल जब इंजन की खोज हुई और इसने काम करना शुरू किया तो लोगों ने इसकी ताकत की तुलना घोड़े से करना शुरू की। शायद इसलिए कि इससे पहले मेहनत वाले कामों में अक्सर घोड़ों की ताकत की मदद ली जाती थी। फिर इंजन बनाने वाला दावा करता कि उसके बनाए इंजन की ताकत चार घोड़ों की ताकत के बराबर है। यानी जो काम चार घोड़ों की ताकत से होगा वो ही यह इंजन अकेला कर सकता है।



चित्र : सुरेश सावन्त

जेम्स वॉट का नाम तो तुमने सुना ही होगा। उन्होंने इंजन को और बेहतर बनाया। और साथ ही इंजन की ताकत पता करने की भी कोशिश की। सबसे पहले उन्होंने देखा कि एक मज़बूत घोड़ा अधिक से अधिक कितना वज़न खींच सकता है। कई प्रयोगों के बाद उन्होंने पाया कि एक अच्छा मज़बूत घोड़ा एक सेकेण्ड के समय में 247 किलो और 500 ग्राम वज़न को एक फुट ऊपर खींच सकता है। फिर उन्होंने इसी को आधार बनाकर इंजन की ताकत जाँची। मतलब एक इंजन अगर इतने ही समय में इस घोड़े के बराबर काम कर सकता हो, तो वह एक हॉर्स पावर की ताकत वाला इंजन कहलाएगा।

अच्छा ये तो बताओ कि अगर एक इंजन 150 हॉर्स पावर का है तो वह कितने घोड़ों के बराबर ताकत रखता है?

चित्र पहेली

1		2		3	■	4	5	
	■		■	6	7	■		■
	■	8		■	9			
	■		■	10		■		■
11	12	■	13	■		■	14	15
■		■	16		■	17	■	
18				■	19		■	
■		■	20	21	■		■	
22			■	23				

संकेत : बाएँ से दाएँ

1.



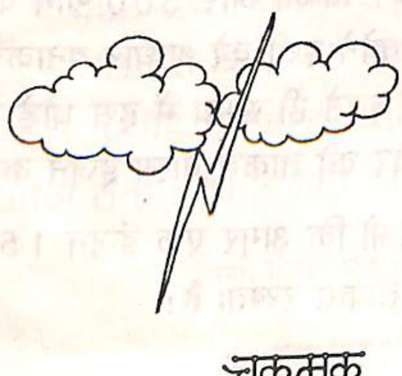
4.



6.



8.



9.



10.



11.



14.



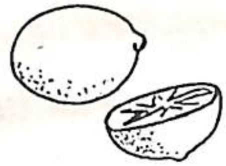
16.



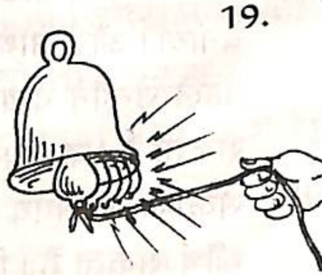
18.



19.



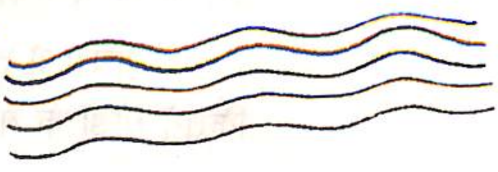
20.



22.

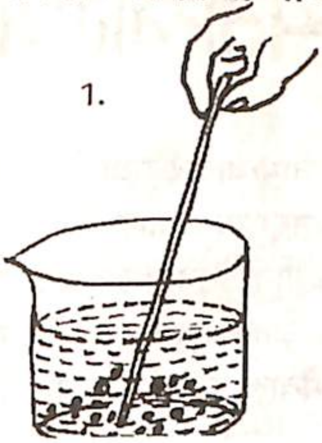


23.



संकेत : ऊपर से नीचे

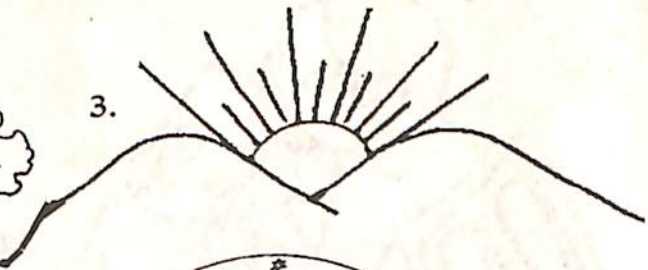
1.



2.



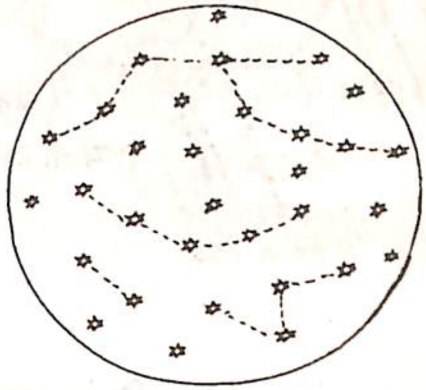
3.



7.



12.



5. फूलों के पराग से
निकलने वाली नली (5)

13.



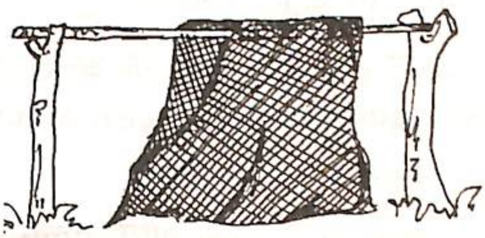
15.



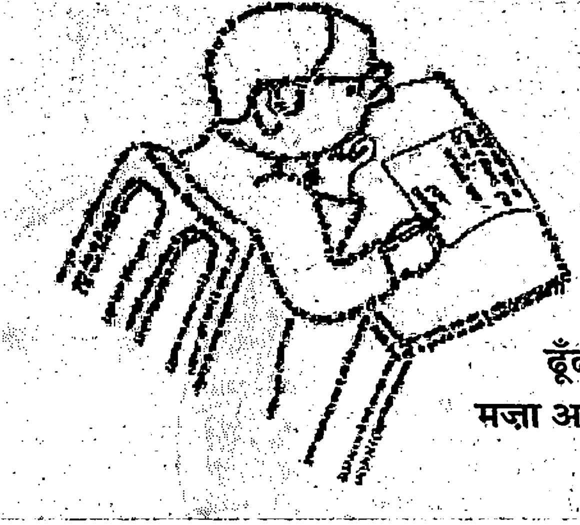
17.



21.







सवालीराम

ये हैं सवालीराम। मज़ाक नहीं, इनका नाम वाकई सवालीराम ही है! और इनका काम है लोगों के तरह-तरह के सवालों के जवाब ढूँढ-ढूँढकर बताना। बच्चों के सवालों का जवाब ढूँढने में इन्हें और भी मज़ा आता है। चकमक के पुराने पाठक इनसे परिचित हैं। तुम सब भी इनसे अपने मन में कुलबुलाने वाले सवाल पूछना शुरू कर दो।

हिचकी क्यों आती है?
हिचकी के समय मुँह में से आवाज़ क्यों निकलती है?

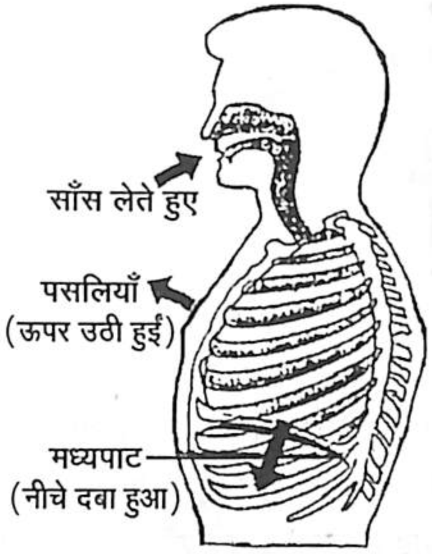
इस सवाल का उत्तर समझने के लिए यह जानना ज़रूरी है कि हमारे फेफड़ों में हवा कैसे आती-जाती है। इसके लिए हमें अपनी छाती के अन्दर बसे अंगों को ठीक से पहचान लेना होगा।

अगर हम अपने सीने के अन्दर झाँक सकें तो वहाँ अपने फेफड़े और हृदय को पाएँगे। इसी प्रकार हमारे पेट (उदर) वाले स्थान में आमाशय, यकृत, छोटी आँत, बड़ी आँत, वृक्क आदि अंग स्थित होते हैं। सीने और पेट के बीच में एक मांसल (मांस से बना) परदा होता है जिसे मध्यपाट या डायफ्राम कहते हैं। फिर सीने में पसलियों से मिलकर पिंजड़े के समान एक रचना बनती है जो हृदय और फेफड़ों की हिफाज़त करती है। पसलियाँ और मध्यपाट लगातार ऊपर-नीचे होते रहते हैं। सबसे पहले तो तुम इन अंगों को चित्र में देखकर इनसे पहचान कर लो।

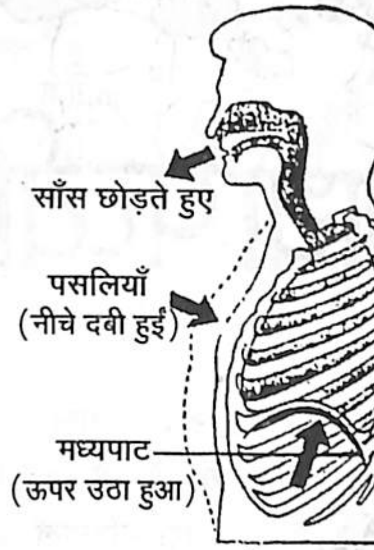
अब देखते हैं कि हम साँस कैसे लेते हैं। हमारे साँस अन्दर लेते समय ही सीने के अन्दर एक और क्रिया होती है। मध्यपाट नीचे दबता है और पसलियाँ ऊपर उठती हैं। तब सीने के भीतर के स्थान का आयतन बढ़ जाता है और फेफड़े लचीले होने से फूल जाते हैं। इससे नाक से ली जाने वाली बाहरी हवा श्वासनली से होती हुई फेफड़ों में भर जाती है।

इसके उलट, साँस छोड़ते समय मध्यपाट ऊपर उठता है और पसलियाँ नीचे दबती हैं। तब इससे बिल्कुल विपरीत क्रिया होती है। यह स्थिति चित्र–2 में दिखाई गई है। इस समय फेफड़ों पर दबाव बढ़ जाता है और उनमें भरी हुई हवा श्वासनली और नाक में से होती हुई बाहर निकल जाती है।

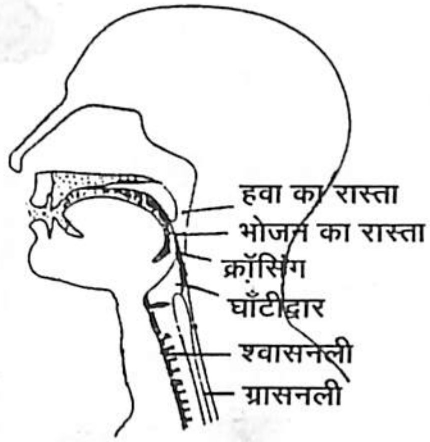
क्या तुम्हारी आँख कभी फड़फड़ाई है? तुम सोच रहे होगे कि अचानक साँस से आँख में कहाँ पहुँच गए। अभी बताता हूँ। यूँ तो हमारी आँख की पलक दिन में कई बार अपने-आप ऊपर नीचे होती रहती है। लेकिन कभी-कभी इसकी पेशियाँ फड़कने लगती हैं। तब पलकों के हिलने पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं रह जाता और यह जल्दी-जल्दी ऊपर-नीचे होने लगती हैं। इसी को हम आँख फड़फड़ाना या फड़कना कहते हैं।



चित्र 1



चित्र 2



चित्र 3

ठीक इसी प्रकार जब मध्यपाट की पेशियाँ फड़कने लगती हैं, तब यह अनियंत्रित ढंग से ऊपर-नीचे होने लगता है। इसी को हिचकी कहते हैं।

अब रहा सवाल कि हिचकी लगने से मुँह से आवाज़ क्यों निकलती है? हम जो कुछ भी खाते हैं वह मुँह के अन्दर पीछे की ओर जाकर या ग्रासनली में होता हुआ आमाशय में पहुँचता है। इसी प्रकार नाक से ली हुई हवा भी मुँह के पिछले भाग से होती हुई श्वासनली में पहुँचती है। मुँह के पिछले भाग में हवा और भोजन के रास्तों का क्रॉसिंग होता है। इस क्रॉसिंग पर वह छेद होता है जिसमें से होकर हवा श्वासनली में जाती है। इस छेद को घाँटीद्वार कहते हैं (चित्र–3)। हिचकी आने पर यह छेद झटके के साथ खुलता और बन्द होता है। झटके से निकलने वाली हवा के कारण ही सीटी के समान आवाज़ पैदा होती है। यही हिचकी की आवाज़ है।

माथापच्ची मई 2003 अंक के हल

1. इफ्फत की उमर पाँच साल और राम की उमर बीस साल होगी।
2. 'छ' नाम वाली पाती के दोनों सिरे एक ही ओर मुड़े हैं। है न!
4. दरअसल चाय के पिछले कप में घुली शक्कर के कारण चाय मीठी थी।
6. एक तीली धन (+) के पहले निशान से और दूसरी 98 को 38 बनाने के लिए उठाना है। समीकरण यूँ बन जाएगा –

   86 – 36 + 38 = 88
7. एक जवाब यह है, तुम और ढूँढो। ए का 50, बी का 48, सी का 51और डी का 49.

चित्र पहेली
मई 2003 अंक का हल

घु	*	र	स	ना	*	क	ड़ा	ही
मं	*	स्	*	*	*	मा	*	*
तु	ल	सी	*	उ	फ	न	न	ली
*	*	कू	ड़ा	दा	न	*	*	ट
छि	*	द	*	ह	*	चा	*	र
ल	*	*	प	र	का	र	*	*
का	ला	हि	र	ण	*	दी	प	क
*	*	मा	*	*	*	वा	*	ल
गौ	त	म	*	दे	ह	री	*	गी



माथापच्ची

1



एक सर्कस वाले ने एक दिन अपने कुल उस्तादों की संख्या गिननी चाही। शेर और शुतुरमुर्गों को गिनने में उसे मुश्किलें आईं। काफी कोशिशों के बाद उसे सिर्फ इतना पता चल सका कि शेर और शुतुरमुर्ग के कुल पैर 78 हैं और कुल सिर 35 हैं। उसे लगा इन दो चीज़ों से वो पता कर सकता है कि शेर कितने हैं और शुतुरमुर्ग कितने? क्या वह ठीक सोचता है?

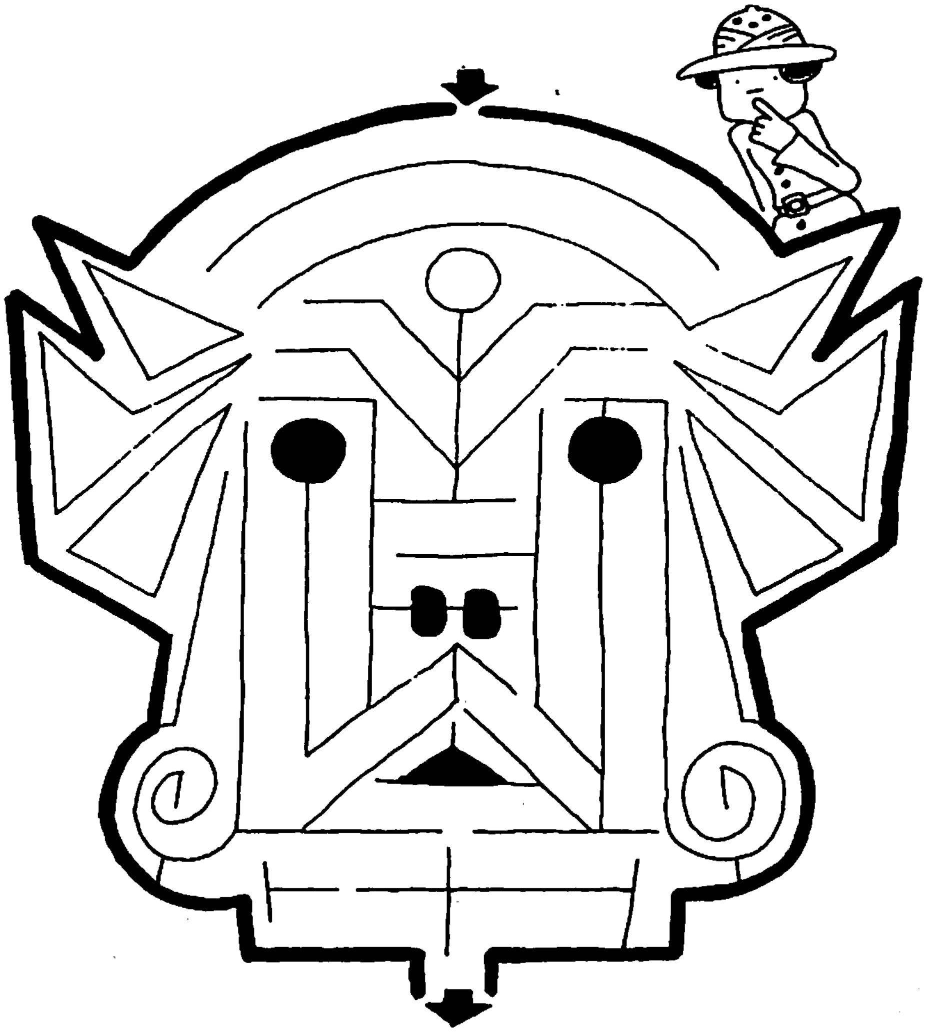
2

सवाल ज़रा सरल-सा है इसलिए थोड़ी जल्दबाज़ी से काम लेना! कितने महीने ऐसे होंगे जिनमें अट्ठाईस दिन होते हैं?

3

इन नौ तस्वीरों में एक कहानी है। या कहो कि एक कहानी के नौ चित्र हैं ये। अदला-बदली के कारण इनका क्रम उलट गया है। पर थोड़ी-सी माथापच्ची के बाद इन चित्रों का सही क्रम पता किया जा सकता है। क्या तुम बता सकते हो कि इनमें से कौन-सा टुकड़ा किसके बाद आएगा?





4

मुखौटे के इस पेचीदा जाल को देखो। क्या इसके बावजूद तुम्हें लगता है कि इसके सिर से घुसकर कोई गर्दन से निकल सकता है। खैर! कोशिश तो करके देखो?

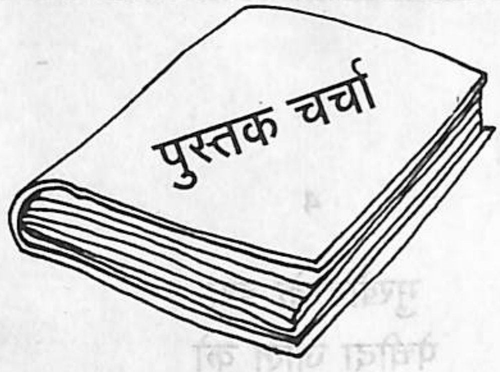
5

अच्छा बताओ, सौ साल के अरसे में कितने ऐसे साल आएँगे जिनमें क्रिसमस भी पड़ेगी और नया साल भी आएगा?

6

गड़बड़झालों से कौन बच पाया है! अब अलमारी में कौशी ने अपने सारे दोस्तों के मोज़े भर दिए। कुल दस जोड़ मोज़े थे। पाँच जोड़ सफेद और पाँच जोड़ हरे रंग के। अगर हमें बगैर देखे मोज़े निकालना पड़ें तो एक ही रंग के दो मोज़े निकालने के लिए कम से कम कितने मोज़े निकालना पड़ेंगे?







चिड़ियाघर

तुमने चिड़ियाघर ज़रूर देखा होगा। 'चिड़ियाघर' एक ऐसी जगह होती है जहाँ कई तरह के पशु-पक्षी एक ही स्थान पर देखे जा सकते हैं। लेकिन यहाँ हम 'चिड़ियाघर' नाम की एक किताब के बारे में बात कर रहे हैं। 'चिड़ियाघर' कविताओं की एक किताब है। इसमें 14 बिल्कुल सरल और छोटी-छोटी कविताएँ हैं। ये सभी कविताएँ बहुत मज़ेदार हैं। कुछ कविताओं की पंक्तियाँ देखो :

ऊँचे ऊँचे ऊँटजी
लगते हमको ठूँटजी
जलते लेकिन पाँव में
नहीं पहनते बूट जी

या फिर,

काले-काले भालू जी
सर्कस वाले भालू जी,
कई इशारे पर नाचे
बैठे ठाले भालू जी,

या यह,

हम ज़रा लेटते खटमल जी
तुम हमें काटते खटमल जी
तन में डंक चुभाकर तीखा
तुम लहू चूसते खटमल जी

इस कविता की किताब में गधेराम जी, चिड़िया, भालू जी, हाथी दादा, बन्दर, बिल्ली मौसी तथा और भी तुम्हारे जाने-पहचाने पशु-पक्षियों तथा घर में एवं घर के आसपास के कई छोटे-छोटे जीव जन्तुओं पर आधारित कविताएँ हैं। किताब में एक और अच्छी बात है कि इसमें कविता के साथ उससे सम्बंधित चित्र भी हैं। इन चित्रों को देखकर तुम्हारे छोटे दोस्त जो पढ़ नहीं सकते हैं, वे भी तुमसे कविता सुनाने को कहेंगे।

कविताएँ इतनी सरल हैं कि यदि तुम इन्हें दो-तीन बार भी पढ़ते हो तो अच्छी तरह याद हो जाएँगी। और यदि इन्हें अपने दोस्तों को सुनाओगे तो खूब मज़ा आएगा।

किताब	:	**चिड़ियाघर**
लेखक	:	**अशोक आनन**
प्रकाशक	:	**पड़ाव प्रकाशन**
कीमत	:	**बारह रुपए**

बन्दर मामा बूम बड़ाम

'बन्दर मामा बूम बड़ाम' भी कविताओं की एक किताब है। इसमें 22 कविताएँ हैं। इस किताब की सभी कविताएँ विविध तरह की हैं। कुछ कविताएँ पशु-पक्षियों पर आधारित हैं तो कुछ फल व मौसम की बातें करती हैं। गर्मी, सर्दी तथा बारिश तीनों ही मौसम की कविताएँ तुम्हें इस किताब में पढ़ने को मिलेंगी।

कुछ वैचारिक कविताएँ भी इस संकलन में दी गई हैं। मनोरंजक कविताओं के साथ-साथ कुछ कविताएँ ऐसी भी हैं जो तुम्हें गम्भीर मुद्दों पर सोचने के लिए प्रेरित करेंगी। ऐसी ही एक कविता है 'मैंने भी एक पेड़ लगाया।' पढ़कर देखो –

पर्यावरण प्रदूषण देख मन भर आया
मैंने भी एक पेड़ लगाया
सड़कों पर देखा मैंने धुएँ का गुब्बार
चाहे गुजरे दुपहिया या मोटर कार।

कविता, लेख तथा जो भी सामग्री हम पढ़ते हैं, कई बार वह भ्रम भी पैदा कर देती हैं। असल में इनमें कवि या लेखक के विचार होते हैं। हमें चाहिए कि पहले हम इन विषयों पर और जानने की कोशिश करें और फिर अपनी राय बनाएँ। इस किताब में भी ऐसी ही एक कविता है जो कि भ्रम पैदा कर सकती है। 'नदिया' नामक इस कविता कि कुछ पंक्तियाँ हैं –

इन पर बने बाँधों से अब
हर ओर आई खुशहाली
प्रफुल्लित है कण-कण यहाँ
खिली-खिली हर डाली-डाली

पर ऐसा है नहीं। तुम यदि अपने आसपास के बाँधों को देखोगे तो पता चलेगा कि कैसी उथल-पुथल उस इलाके में हो जाती है जहाँ बाँध बनाए जाते हैं। उस पूरे क्षेत्र में रहने वाले लोग और पशु-पक्षी ही नहीं, पेड़ -पौधे तक प्रभावित हो जाते हैं। तो फिर कविता में जिस खुशहाली की बात की जा रही है, वो कैसे आएगी?

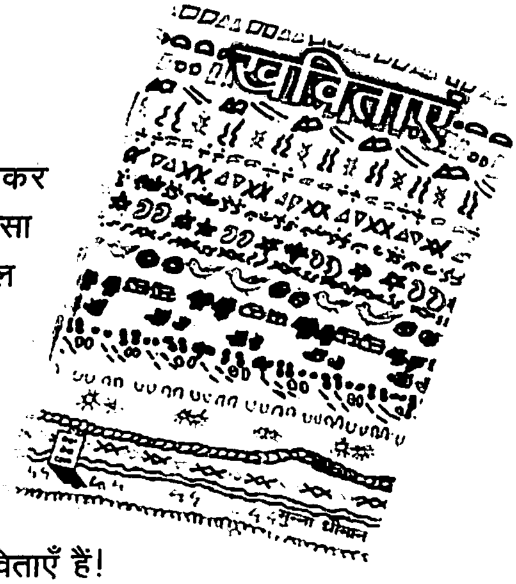
इस किताब में कविताओं के साथ ही हर पेज पर चित्र भी दिए गए हैं। ये चित्र विभिन्न स्त्रोतों से लिए गए लगते हैं इसलिए इनकी शैली में बहुत विविधता है। चित्रों की प्रस्तुति में सफाई की काफी गुंजाइश रह गई है। फिर पन्द्रह रुपए में यह किताब कुछ महँगी भी लगती है।



किताब: बन्दर मामा बूम बड़ाम
लेखक : ओम उपाध्याय
प्रकाशक: पड़ाव प्रकाशन
कीमत : पन्द्रह रुपए

किताब : खविताएं
लेखक : मुन्ना धीमान
प्रकाशक : सेन्टर फार एजुकेशन एण्ड वॉलन्टरी एक्शन
मूल्य : दस रुपये

खविताएं



'खविताएं' नाम पढ़कर तुम्हें कुछ अटपटा सा लग रहा होगा। असल में यह एक खविताओं, अरे नहीं कविताओं की किताब का नाम है जिसमें छोटी बड़ी बारह खविताएँ, मतलब कविताएँ हैं!

ये सभी कविताएँ हमारे आसपास की चीज़ों तथा रोज़मर्रा की घटनाओं पर आधारित हैं। अच्छी बात यह भी है कि ये सभी कविताएँ काफी सरल भाषा में हैं। इन कविताओं को पढ़ने में तुम्हें मज़ा तो आएगा ही, कुछ कविताएँ ऐसी भी हैं जो तुम्हें सोचने तथा सवाल करने की प्रेरणा देंगी। जैसे एक कविता कि पंक्ति है –

क्या गारन्टी है कि चंदा मामा ही हैं
मासी नहीं हैं दीदी नहीं है,
मामा ही हैं

तारों के पेरेन्ट्स, चंदा-मामा-मासी, टीचर जी, हड्डी वाला कुत्ता, अगर रास्ता गुम हो जाए, ताला चाबी तथा ऐसी ही कई और कविताएँ इस संग्रह में हैं। हालाँकि कुछ कविताएँ ऐसी भी हैं शायद जिनको पढ़ने में तुम्हारा मन नहीं लगे। जैसे एक कविता है –

घटाव ने सोचा
क्या मैं हमेशा
घटता ही जाऊँगा
क्या मैं सारी ज़िन्दगी
घाटे ही खाऊँगा......

'खविताएं' किताब के हर पेज पर कविता के साथ ही चित्र भी दिए गए हैं जिससे यह किताब अच्छी लगती है। इस किताब का प्रकाशन सेवा नामक एक स्वयंसेवी संस्था ने किया है। चण्डीगढ़ की यह संस्था सामुदायिक रंगमंच, सामूहिक कार्यशालाओं, फिल्म और वैकल्पिक शैक्षणिक प्रक्रियाओं के माध्यम से बच्चों व बड़ों की शिक्षा के क्षेत्र में काम करती है।

समीक्षा : शिवनारायण गौर



चकमक समाचार

पर हमें खेलना है

बीते माह भोपाल के भारत भवन में कुछ अच्छे नाटकों का मंचन हुआ। इन में से एक था बच्चों का नाटक ... 'पर हमें खेलना है!'

यह नाटक संस्कार रंग टोली नाम की एक संस्था ने किया, जो नाटकों की दुनिया में मशहूर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली का अंग है। कम्पनी का उद्देश्य शिक्षा में थियेटर को बढ़ावा देना है जिससे शिक्षा को उबाऊ होने से बचाया जा सके। ज़ाहिर है संस्था बच्चों के साथ और बच्चों के लिए काम करती है। ये तो था टोली के बारे में।

नाटक की शुरुआत एक ऐसे स्कूल से होती है जहाँ आम स्कूलों की तरह कई बच्चे पढ़ते हैं। एक दिन शहर में दंगा हो जाता है। दंगों के डर के कारण न तो बच्चे स्कूल जा पाते हैं और न बाहर खेलने। घर में कैद बच्चे तरह-तरह की अफवाहों और असलियतों का सामना करते हैं।

कुछ दिनों बाद स्कूल खुलता है। बच्चे स्कूल जाते हैं पर दंगा उनके मन पर गहरा असर छोड़ गया है। अब वे अपने को धर्म से जोड़ने लगते हैं। खैर, जल्दी ही उन्हें पता चल जाता है कि यह धार्मिक पहचान और लड़ाई उनके रिश्तों पर गलत असर डाल रही है। वे पछताते हैं। आखिर में वे तय करते हैं कि न सिर्फ साथ-साथ रहेंगे बल्कि इसके लिए वे ऐसी लड़ाईयों का विरोध भी करते हैं। इस पहल से उनके अभिभावक भी स्कूल बदलकर उनको अलग करने के अपने निर्णय पर सोचने को मजबूर हो जाते हैं।

बेमिसाल कथा वाले इस नाटक के लेखक श्रीरंग गोडबोले हैं। और इसका निर्देशन किया था मशहूर निर्देशक डॉ. मोहन अगाशे ने।





रपट : सुशील शुक्ल
फोटो : संस्कार रंग टोली के प्रकाशन से

शिविर सम्पन्न

पिछले महीने देवास में एक दस दिवसीय रचनात्मक गतिविधि शिविर हुआ। इस शिविर में इन्दौर, शिवपुरी, धामनौद तथा अभयपुर के अलावा देवास के लगभग चालीस स्कूलों के अंदाज़न डेढ़ सौ बच्चों ने हिस्सा लिया।

इस शिविर में बच्चों ने कोलाज, चित्रकारी, कागज़ के खेल, मिट्टी से विभिन्न आकृतियाँ, कथा-कविता लेखन, विज्ञान के प्रयोग जैसी अलग अलग स्वाद की गतिविधियाँ कीं। दस के दसों दिन बच्चे गतिविधियों में डूबे रहे। कोई चिड़िया बना रहा था तो कोई मोर, कोई मटका तो कोई मछली, बन्दर....... तो कोई मिट्टी के खिलौने बना रहा था और कोई झूमर की सजावट में मगन था। कुछ बड़े बच्चों ने इस दौरान दीवार अखबार भी निकाला और उसमें लेख भी लिखे।

इस माहौल में बच्चे एकदम खुश नज़र आ रहे थे। उनके चेहरे खिले-खिले थे। और क्यों न हों? जहाँ न फिजूल की डाँट-डपट, न स्कूली परीक्षा का डर हो, जहाँ सिर्फ अपनी पसन्दीदा चीज़ सीखने और करने की छूट हो, वहाँ बच्चे खुशी-खुशी बहुत कुछ सीख लेते हैं।

इस शिविर में सोनाली पिठवे, जयप्रकाश चौहान एवं सारंग क्षीरसागर, शासकीय ललित कला संस्थान इन्दौर और राहिल शेख, भव्यांश प्रखर ने स्रोत व्यक्ति की भूमिका निभाई।

आखिरी दिन बच्चों ने शिविर को जारी रखने की माँग की। तय हुआ कि एकलव्य के देवास केन्द्र के पुस्तकालय में ये गतिविधियाँ हफ्ते में एक दिन दोपहर में कुछ घण्टे जारी रखी जाएँ।

रपट : दिनेश शर्मा



छाया : दिनेश शर्मा

बाल विवाह पर राज्य सरकारों को डाँट पड़ी

हाल ही में हमारे देश के सबसे बड़े न्यायालय, सुप्रीम कोर्ट ने केन्द्र सरकार और आँध्र प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, कर्णाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश की सरकारों को एक नोटिस जारी किया है। इसमें यह कहा गया है कि इन सब राज्यों में बहुत बड़े पैमाने पर छोटे बच्चों की शादी हो रही है और यहाँ की सरकारें इसे रोकने के लिए वैसे कदम नहीं उठा रही जो उन्हें उठाना चाहिए। एक स्वयंसेवी संस्था द्वारा लगाई गई शिकायत की सुनवाई के बाद जारी किए गए इस नोटिस में कहा गया है कि कई लड़कियाँ बचपन में ही माँ बन जाती हैं और कई बार इसी कारण उनकी जान भी चली जाती है। **टेलिग्राफ, 7.5.03**



खेल समाचार

क्रिकेट



वसीम अकरम ने क्रिकेट से संन्यास ले लिया है। तुम तो जानते ही होगे उन्होंने सैंकड़ों बार अपने बूते मैच जिताए हैं। उन्हें हमेशा न सिर्फ बेहतरीन खिलाड़ी बल्कि एक अच्छे इन्सान के रूप में भी याद किया जाता रहेगा। उधर शुरू के मैचों में ऑस्ट्रेलिया के हाथों वेस्ट इण्डीज़ की धुलाई होती रही। एक दिवसीय मुकाबलों में भी ऑस्ट्रेलिया ने शृंखला के चारों मैच जीते। बाद के तीन मैच जीतकर इण्डीज़ ने थोड़ा दम ज़रूर दिखाया है।

एथलेटिक्स



हमारे पड़ोसी देश श्रीलंका की फर्राटा धाविका सुशांतिका जयसिंघे ने एशियाई ग्राँपी एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में सौ मीटर दौड़ में नया रिकॉर्ड बनाया। उन्होंने यह दूरी मात्र साढ़े ग्यारह सेकण्ड में पूरी की।

टेबिल टेनिस



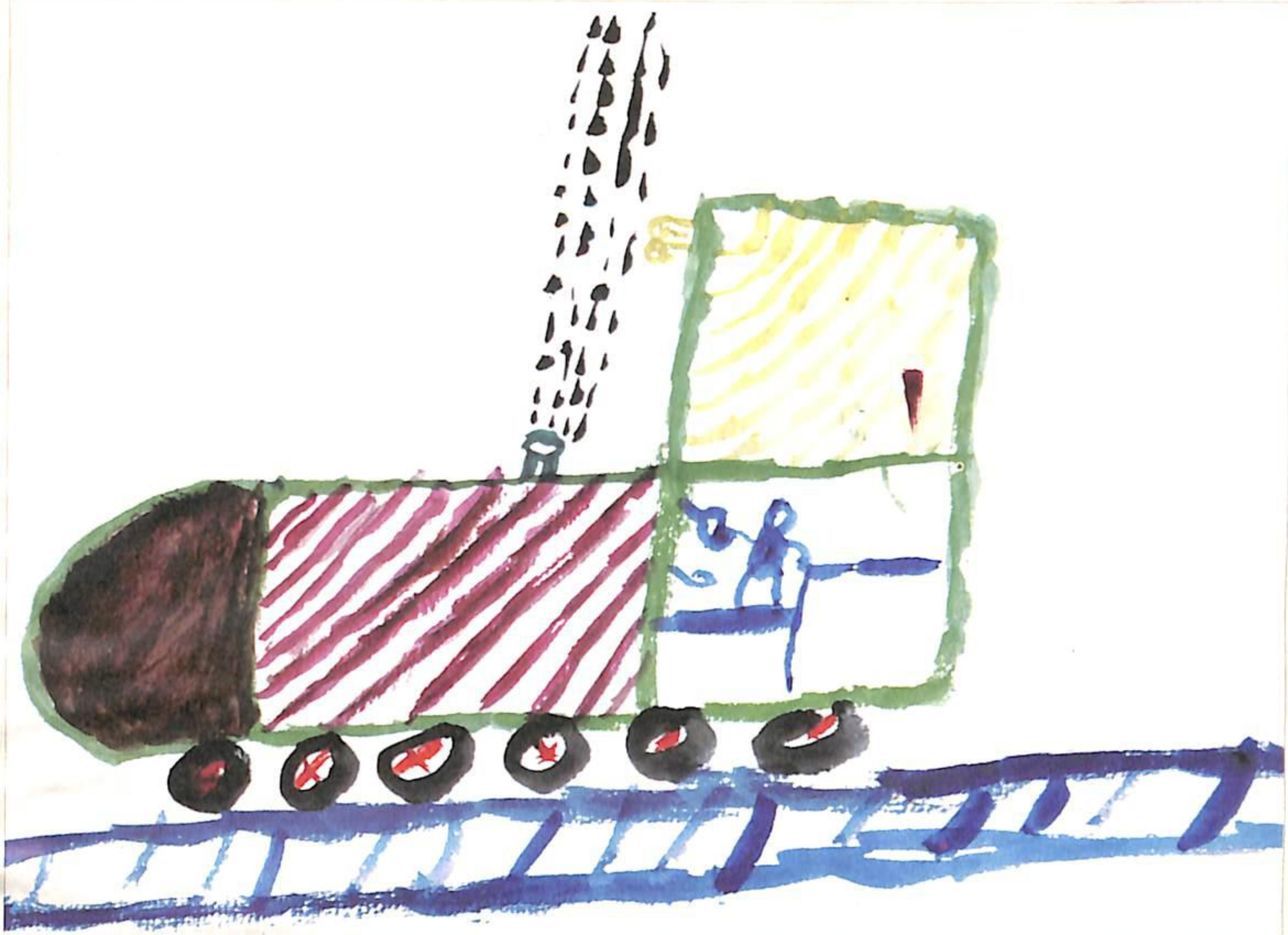
वार्नर स्कॉलेजर ने कोरियाई जू से ह्यूक को हराकर वर्ल्ड टेबिल टेनिस चैम्पियनशिप जीत ली है। ऑस्ट्रिया को 66 साल बाद यह टेबिल टेनिस का खिताब हासिल हुआ है। 1937 के साल में रिचर्ड बर्गमॉन विश्व चैम्पियन बने थे।

फ्रेंच ओपन के मुकाबले भी इन दिनों खेल दुनिया में छाए हुए हैं। महिलाओं के एकल मुकाबलों में जापान की एई सुगियामा ने सबसे पहले प्री क्वार्टर फायनल में जगह बनाई है जहाँ उनका मुकाबला सेरेना विलियम्स से होगा।

हॉकी



ऑस्ट्रेलिया में हॉकी के ज़ोरदार मुकाबले शुरू हो गए। भाग लेने वाली टीमों में भारत के अलावा ऑस्ट्रेलिया और इसी देश की ए टीम तथा पाकिस्तान है। पहले मैच में भारतीय टीम ऑस्ट्रेलिया से दो के मुकाबले शून्य गोल से हार गई। भारत ने पाकिस्तान को एक रोमांचक मैच में हराकर फायनल में जगह बना ली है। फायनल में पहुँचने वाली दूसरी टीम ऑस्ट्रेलिया है।



रिजवान, मोरगढ़ी, हरदा, म.प्र.



तिलकचन्द, सातवीं, मोरगढ़ी, हरदा, म.प्र.



रैक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल प्रिंटर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-16 से प्रकाशित। संपादक : विनोद